संगत संसार

संरक्षक :

स. वीरेन्द्र सिंह जौहर नई दिल्ली

प्रबंधकीय मण्डल :

स. गुरुचरण सिंह गिल, जयपुर (अध्यक्ष)
श्री राकेश रिखी, रांची (मंत्री)
श्री विनोद गांधी, दिल्ली (कोषप्रमुख)
श्री संतोष तनेजा, दिल्ली (सदस्य)
स. रविन्द्रपाल सिंह, दिल्ली (सदस्य)
श्री सुदर्शन सरीन, दिल्ली (सदस्य)

संपादकीय मण्डल :

डॉ. कुलदीप अग्निहोत्री, हिमाचल प्रदेश
डॉ. अवतार एस. शास्त्री, आंध्रप्रदेश
स. कुलवंत सिंह सचदेवा, ग्वालियर
स. राजेन्द्र सिंह, फरीदाबाद

संस्थापक : स्व. रमेश श्रोत्रिय

संगत संसार कार्यालय
4/28, W.E.A, सरस्वती मार्ग,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 24505289, फैक्स : 25728030
email: sikhsangat@khalsa.com/
website : www.sangatsansar.com

सूचना : 'संगत संसार' में छपी सामग्री से सम्पादकीय मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में अनेक विद्वानों के लेखों एवम् चित्रों का समायोजन किया गया है। संगत संसार सोसायटी उनकी आभारी है।

अज्ञानतावश मुद्रण में होने वाली सभी त्रुटियों के लिए हम गुरु महाराज व संगत से क्षमाप्रार्थी हैं। कृपया उदारतापूर्वक क्षमा करें।

'संगत संसार' में प्रकाशित किसी भी सामग्री से सम्बंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्रवाई प्रकाशन-तिथि से तीन माह के अन्दर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की पूछताछ व कार्रवाई पर हम जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हैं। कार्रवाई का न्याय-क्षेत्र दिल्ली होगा। ●

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा।
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा।
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा।
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा।
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा।
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा।
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा।
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना।
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा।।

(श्री गुरु अर्जुनदेव जी रचित 'बारहमाह मांझ' से)

चैत्र के माध्यम से गुरुदेव कहते है कि ऐसे गोविन्द की आराधना कीजिए जिससे बहुत आनन्द होवे। जिह्वा से नाम का उच्चारण सन्तजनों के साथ मिलकर प्राप्त होता है। जिन्होंने अपने प्रभु को पाया है, उन्हीं का आगमन अर्थात् जन्म सफल है। एक क्षण भी उस प्रभु के बिना जो जीना है, उससे पुरुषों का जन्म व्यर्थ जाता है। जल, थल, पृथ्वी, आकाश, सर्वत्र उसी का प्रसार है और वनों में भी वही परिव्याप्त है। जिनको ऐसा प्रभु स्मरण नहीं आता, उनका दुख कितना अधिक है अर्थात् उनका दुख अपरिमाप्य है। जिन्होंने उस प्रभु को जपा है, उसके भाग्य शिरोमणि हैं अर्थात् उनके भाग्य अनन्त हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, हरि के दर्शनों को मन चाहता है और मन में दर्शनों की अतीव उत्कण्ठा हैं। चैत्र द्वारा गुरुजी कहते हैं, जो उस प्रभु को मिलाए, मैं उसके चरणों को स्पर्श करता हूँ।●

सम्पादकीय

पाकिस्तान में हिन्दु और सिखों की स्थिति

डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

पिछले दिनों पाकिस्तान में पेशावर के पास इस्लामी जिहादियों ने स.जसपाल सिंह और स. महल सिंह के सिर काट कर उनकी हत्या कर दी। कटे हुए सिर नेजों पर टांग कर उन्हें गलियों बाजारों में घुमाया और फिर उनको गुरूद्वारे में भेज दिया। राक्षसी बर्बता का यह इस्लामी नमूना है जिसका सामना मध्यकाल से ही विश्व के अनेक हिस्सों ने किया है और भारत ने जिसको मुहम्मद बिल कासिम के आक्रमणों के बाद से ही देखा और भोगा है। प्रश्न यह है कि इन लोगों को किस कारण से मारा गया ? उनका दोष केवल इतना ही था कि उन्होंने भारत पाक विभाजन के बाद पाकिस्तान में रह जाने का निर्णय भी किया और अपने पंथ अथवा मजहब को भी न छोड़ने का निर्णय किया। शायद इस निर्णय के पीछे जिन्नाह के उस भाषण का भी असर रहा होगा जिसमें उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान में सभी मजहबों और पंथों के लोग स्वतंत्रता पूर्वक रह सकेंगे । परन्तु जिन्ना के वक्त में ही पाकिस्तान ने स्वयं को इस्लामी राष्ट्र घोषित कर दिया था और हिन्दु सिखों के लिए फरमान बहुत ही स्पष्ट था या तो पाकिस्तान छोड़ों या फिर अपने पंथ अथवा मजहब को छोड़ों यही कारण था कि पिछले तीन चार दशकों में बहुत से लोग पाकिस्तान छोड़कर भारत आ गये परन्तु अभी भी बहुत ही थोड़ी संख्या में पाकिस्तान में हिन्दु सिख बचे हुए हैं। और यह ऐसे लोग हैं जिन्होंने तमाम कठिनाईयों के बावजूद अपनी आस्था को नहीं त्यागा है। अभी एक और हिन्दु को इस्लामी कट्टरपंथियों ने अगवाह किया हुआ है जिसके बारे में अभी कुछ पता नहीं चला है।

ये लोग बच सकते थे यदि इन्होंने पाकिस्तान में अपने मजहब को छोड़कर इस्लामी मज़हब को स्वीकार कर लिया होता। परन्तु इन्होंने ऐसा नही किया। नौवे गुरू श्री गुरु तेग बहादुर जी के सामने भी ऐसा ही प्रश्न प्रस्तुत हुआ था। औरंगजैब ने उनके सामने दो विकल्प रखे थे या तो इस्लाम को स्वीकार करो या फिर मरने के लिए तैयार हो जाओ। उन्होंने दूसरे विकल्प को चुना था। स. जसपाल सिंह और स.महल सिंह ने भी २१वीं शताब्दी में श्री गुरु तेगबहादुर जी द्वारा स्थापित परम्परा का निर्वाह किया है। पाकिस्तान में इस्लाम के अतिरिक्त अन्य मजहब वालों की स्थिति वहां के सविंधान के मुताबिक ही दोयम दर्जे की है। और ऊपर से इस्लामी जिहादियों ने उसे और भी नारकिये बना दिया है। परन्तु इन नर केसरियों को सलाम करना होगा जिन्होंने प्राण दे दिये पर अपनी आस्था नहीं त्यागी इतिहास इस प्रकार के लोगों से बनता है।

परन्तु भारत सरकार के लिए स. जसपाल सिंह और स.महल सिंह का बलिदान गौण है। क्योंकि विदेश मंत्रालय के रिकार्ड के अनुसार तो ये दोनों पाकिस्तानी नागरिक थे इसलिए विदेशी थे। भारत सरकार का नियम है कि वह दूसरे देशों के आन्तरिक मामलों में दखलांदाजी नहीं करती। शायद यही कारण है कि प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने इस प्रश्न को भारत पाकिस्तान के बीच होने वाली वार्ता के एजेंडा में नम्बर एक पर रखना उचित नहीं समझा। भारत में यदि किसी इस्लाम पंथी को लगता है कि उसके साथ बुरा व्यवहार हो रहा है तो दुनियाँ के अनेक इस्लामी देश उसके समर्थन में खड़े हो जाते हैं। जाने माने चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन को जब यह महसूस हुआ कि भारत में रहना ठीक नहीं है तब उन्हें कत्तर देश ने भी अपनी देश की नागरिकता देने का प्रस्ताव रखा है। इसी प्रकार उड़ीसा के कंधमाल में जब वहाँ की जनजातियों और मतांत्रित इसाईयों के बीच मे फसाद हुआ तो इसाईयों की मदद के लिए यूरोपिय संघ का 11 सदस्यीय जाँच दल कंध माल पहुँच गया और उसने सारी उड़ीसा सरकार को लाईन हाजिर कर दिया। परन्तु दुर्भाग्य से पाकिस्तान में स. जसपाल सिंह और स. महल सिंह की हत्या होती है तो भारत सरकार के लिए यह मामूली घटना है जिसपर एक आध पंक्ति में दुःख प्रकट किया जा सकता है। प्रश्न यह है कि यदि दूसरे देशों खासकर पाकिस्तान में, जो 1947 से पहले भारत का ही हिस्सा था और सभी लोग भारतीय नागरिक ही थे, हिन्दु और सिखों पर अपने मजहब के कारण अत्याचार होते हैं तो भारत का क्या कर्तव्य है? ऐसे लोग दुःख की घड़ी में भारत की और नहीं देखेंगे तो किस की और देखेंगे ? परन्तु भारत सरकार पंथ निरपेक्षता के मोह से इतनी ग्रस्त है कि उसकी दष्टि में ऐसे तमाम प्रश्नों पर कड़ा रूख अपनाना तो दूर इन पर चर्चा करना भी साम्प्रदायिकता की श्रेणी में आ जाता है। पाकिस्तान के निर्माण के लिए यहाँ के लोग तो जिम्मेदार नहीं थे देश का विभाजन राजनेताओं की महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के कारण हुआ। उन महत्वकांक्षाओं के परिणाम से जो निर्माण हुआ है उस में स. जसपाल सिंह और स. महल सिंह जैसे लोग अपना बलिदान क्यों दें ? भारत सरकार को और खासकर के मनमोहन सिंह को इस बात का उत्तर तो देना ही चाहिए। परन्तु दिल्ली में शायद बहुत से लोगों को यह ही समझ नहीं आ रहा कि महल सिंह और जसपाल सिंह ने अपने प्राण क्यों गवाये ? यदि वह मुसलमान बन जाते तो कोई क्यों उनको मारता? जो लोग इस प्रकार की मानसिकता में जीते है वे न तो जसपाल और महल के दर्द को समझ पाते हैं और न ही उनकी शहादत को सलाम कर पाते हैं। **परन्तु उनके इस बलिदान ने विभाजन के प्रश्न को एक बार फिर चर्चा में ला दिया है।**

।।असीम प्रेम की क्रिया भक्ति है।।

प्रिंसीपल, **दिलीप गोगटे**, नान्देड़

भक्ति द्वारा प्रभु को जानना ही मनुष्य जन्म को सफल करना है। सब कुछ भूलकर, जो प्रभु चरणों में समर्पित हो सकता है, वह धन्य है। ऐसे ही व्यक्ति का आदर्श हमें प्रेरक होता है। उपभोग को सर्वस्व मानकर, जीनेवालों का जीवन निष्फल होता है। ऐसे व्यक्तियों का जीवित रहना और मरना समान है।

भक्ति की नींव नैतिकता है। नैतिकता एक बहुआयामी (Multi dimensional) संकल्पना है। अर्थ और कामवासना की शुचिर्भूतता, नैतिकता में समविष्ट है। जो विरासत में मिली नहीं है, या जो कमाया नहीं है, या जो स्वभाव के रूप में किसीसे मिला नहीं है, पर सत्ता, संपत्ति या अन्य साधनों का गलत उपयोग करके, किसी ने यदि इकट्ठा किया है, तो ऐसे धन का वह नैतिक दृष्टि से स्वामी नहीं है। ईशावास्योपनिषद् में 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' (मं. 1) ऐसा मंत्र है। प्रभु के प्रसाद के तौर पर (नैतिक मार्ग से) मिला हुआ धन ही, नैतिक दृष्टि से अपना है। जो मेरा नहीं है उस पर बुरी नजर रखना, गिद्ध की वृत्ति अपनाना है। श्री गुरु नानकदेव जी ने 'हक पराइया नानका' इस रचना में कहा है : जो अपना नहीं है उसे हड़पना यह हिंदुओं का गौमांस खाने जैसा और मुसलमानों का सूअर मांस खाने के समान है। गुरुदेव ने यह हिंदू और मुसलमानों के संदर्भ में कहा है, हम न हिंदू हैं, न मुसलमान है, हमें भी छूट नहीं है, ऐसा हिंदू, मुस्लिमों के सिवा अन्य धर्मियों को सोचना चाहिए। दिव्यात्माओं के शब्द जैसे महत्व के होते हैं, वैसे ही उनके शब्दों के पीछे जो आशय होता है, वह भी महत्व का होता है। पर धन हड़पना यह गौमांस और सूअर मांस खाने के समान है। यह अंतिम छोर की बात है। जो समस्त मानव जाति को दृष्टिक्षेप में रखकर कही गई है। लताड़ने की यह चरम सीमा है। पर धन के संदर्भ में कही हुई बात पर स्त्री के संबंध में भी उतनी ही सच है। पराई औरत को मां समझने में कौनसी हानि है? ऐसा प्रश्न तुकाराम महाराज जी ने पूछा है। स्त्री और धन के संबंध में साफ सुथरापन नहीं है और हम भक्ति करने का दावा करते हैं, तो वह निष्फल है। देश या समाज हितों को बाधक होने वाली, या देश के कानून विरोधी कृतियां भी अनैतिक मानी जाती हैं। रिश्वत लेना, अपना कर्तव्य उचित ढंग से नहीं निभाना, इन सभी बातों का खड़े होकर की हुई भक्ति, भक्ति नहीं, आत्मवंचना है। आर्थिक तथा यौन संबंधों में उच्च कोटि की शुचिर्भतता आवश्यक होती है। इस संदर्भ में महाभारत में वर्णित अर्जुन के जीवन का एक प्रसंग याद आता है। अप्सरा उर्वशी ने एक बार अर्जुन को भोग देना चाहा था। अर्जुन ने तत्काल कहा, 'मेरे पूर्वजों के साथ आपके संबंध थे। इस कारण मैं आपका भोग नहीं ले सकता हूँ।' एक सुन्दर स्त्री इच्छा व्यक्त करती है। फिर भी अर्जुन उसका प्रस्ताव ठुकराता है। यह बात हमेशा ध्यान में रखने जैसी है। जो मेरा नहीं है, उसकी अभिलाषा अनैतिक है।

असीम प्रेम की क्रिया भक्ति है। श्री गुरु नानकदेव जी कहते हैं :-

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि।
लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि।
जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि।।१।।

(श्री राग पृ. 59)

हे मन ! तुम हरि से ऐसा प्रगाढ़ प्रेम कर, जैसा कमल का जल से होता है। जल की लहरों से कमल को कष्ट होता है। फिर भी कमल मुरझाता नहीं। अपितु जल के प्यार से कमल खिल उठता है। कमल का जीवनरस जल है। जल बिना कमल की मृत्यु है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो अच्छे दिनों में प्रभु को भूलते हैं। तो कुछ लोग बुरे दिनों में प्रभु से नाराज होकर बिछड़ते हैं। भक्त वह है, जो प्रभु से सदैव जुड़ा हुआ होता है। भक्ति यह विशिष्ट काल में करने की क्रिया नहीं है। एक बार प्रभु को अपनाने के बाद, जो उसे कभी भी नहीं छोड़ते, उन्हें भक्त कहा जाता है। भक्त की वृत्ति कैसी होनी चाहिये, इस बारे में गुरुदेव कहते हैं:

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछली नीर।
जिउ अधिकउ तिउ सुख घणो मनि तनि सांति सरीर।।
बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणे अभ पीर।।

(श्री राग मं. 1 पृ. 59)

होला-मोहल्ला

– स. अजीत सिंह नारंग, इन्दौर

'होला-मोहल्ला' दशम् गुरु गोबिन्द सिंह जी की विचारधारा का साक्षात्कार है। 'होला-मोहल्ला' सशस्त्र संगत के सामर्थ्य का प्रगटीकरण हैं। संगत करना, गुरु वाले बनना, कीर्तन-अरदास करना, शस्त्र धारण करना, इकट्ठे होकर समरसता का वातावरण तैयार करना ही है-'होला-मौहल्ला' त्यौहार। क्षेत्रवाद, जाति-पाति से परे विलक्षण सिख संगत एकत्रीकरण का राष्ट्रवादी कार्य है।

फागुन में श्री आनन्दपुर साहिब में 'होला-मोहल्ला' का पर्व धूम-धाम से मनाया जाता है। लाखों श्रद्धालुजन, सिख संगत, निहंग, निर्मले सन्त, पंथ के जत्थेदार इस महान गुरु के त्यौहार में भाग लेते है। 'गतका', सिख जीवन पद्धति के अनुसार शस्त्र कला, का प्रदर्शन होता है। घुड़सवार अश्व-कला को दिखा संगत में जोश भरते है। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की अगुवाई में नगर कीर्तन होता है। पंज-प्यारे, नगर कीर्तन में संगत की प्रधानगी करते है। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के दीवान सजते हैं। कीर्तन, कथा, ढाडीयों के वीर रस के गीत, अरदास और गुरु का लंगर होता है।

जब गुरु गोबिन्द सिंह जी के सिरमौर राज के 'पौण्टा' क्षेत्र से श्री आनन्दपुर साहिब आने का संदेश संगत तक पहुंचा, तो अत्याधिक उत्साहित हो सिख इकट्ठा होने लगे। संगत उमड़ आयी थी। 'गुर प्रताप सूरज' में लिखा है-

संध्या लग थिर सभा महिं दरशन को दीना।
पूरी कामना सभिनि की दुख दारिद हीना।
सिंघ पवर उठि करि चले सबि बंदन ठानी।
प्रविशे सुन्दर सदन महिं सतगुर गुन खानी।

दीप माला तक संगत की बहुत ज्यादा संख्या हो गई थी। यह समारोह इस दृष्टि से विलक्षण था, क्योंकि उस कालखण्ड में धर्म, संस्कृति और राजनीति को केन्द्र में रखकर दो व्यक्ति एक स्थान पर नहीं बैठ पाते थे। समाज की शिथिलता के उस दौर में दशम् गुरु के स्वागत में सिख संगत का हजूम एक अलग कहानी कह रहा था। सुन्दरी एवम् राणा सूरत सिंह 'करता' जी की कृति 'श्री कलगीधर चमत्कार' के पृष्ठ 156-157 पर यह लिखा है-

'...... उस समय अनगिनत माया (धन) इकट्ठी हो गयी। जिसे गुरुजी ने अपने उद्देश्यों के लिये खर्च करना आरम्भ किया। गुरु साहिब हृदय में यह धार कर बैठे थे कि लोगों में प्रचार के माध्यम से स्वतंत्रता के लिये बल का संचार करना है। सो श्री आनंदपुर साहिब आकर, सिखों में चयनित कर तरुण सेना का निर्माण किया। अपनी सेना सुन्दर सजीली और बलवान, सृजित करनी आरम्भ की।.... ऐसा न हो कि 'पौण्टा' की तरह आवश्यकता पड़ने पर कुछ कर्तव्यों का निर्वहन न कर पायें। ऐसा करना 'नमक हरामी' होगी। सेना के लिये आयुद्धों की, सामान की आवश्यकता थी, सो 'सिलाखाने' बनाये गये। शस्त्र, अस्त्र, दारु, गोली सब अपनी तैयार हो। रहिकले, जम्बूरे, तोप तक स्वनिर्मित हो, इसका ध्यान रखा गया। फिर आक्रमण की स्थिति से निबटने के लिये कोट, किले, दमदमे की आवश्यकता थी। उसका निर्माण भी करवाया। इन सभी कार्यों के लिये तरह-तरह के कारीगर आवश्यक थे, सो वे भी मंगवाये गये। जहां, यह सब हो, वहां व्यापार मण्डी भी आवश्यक थी। जो बनाई गई।'

श्री हजूर साहिब के ग्रंथी भाई हजूरा सिंह जी को किसी उदासी साधु ने पुरानी पाण्डुलिपि दी थी,

जो दशम् गुरु गोबिन्द सिंह जी का आनन्दपुर साहिब का हुक्मनामा है। इस हुक्मनामे में गुरु जी संगत को हुक्म सादर करते हुए लिखते हैं-

'आईयां सगतां, संता, सेवका नूं हुक्म कि जित्थे विद्वान ते हुनरमन्द देखो। उस नूं ऐथे भेजो। चंगें-चंगे कारीगरां नूं नाल लिआओ, या साडे पास घल देओ।'

इन गतिविधियों से श्री आनन्दपुर साहिब की रौनक बढ़ गई थी, मोहल्ले और बाजार बन गये थे। सूरमे इकट्ठे हो गये थे। शस्त्रों-अस्त्रों का अभ्यास प्रारम्भ हो गया था। घोड़े रखना, पालना शिक्षित करना, युद्ध के लिये तैयार करना-यह सब हो रहा था। घोड़ों के साज के लिये चमड़े का कारखाना शुरु हुआ। सिगलीगर इकट्ठे हो गये और सिलेखाने के कारज में जुटे। विद्वानों का एक बड़ा समूह श्री आनन्दपुर साहिब में मौजूद हो गया था, जो संस्कृत, बृजभाषा, अवधी, फारसी, अरबी के जानकार थे।

'त्वारीख सूरज प्रकाश' में भी लिखा है कि 'श्री गुरुजी ने अपने शान्तमयी कार्यों के साथ संगतों में वीर रसी बल तेज पैदा करने का कार्य भी जारी रखा....।'

सिख को गुरबाणी से जोड़ा गया। ताकि जीवन का मनोरथ समझ में आ जाये। सिख उपकार करे, आपा वारे, पर अभिमान और मद में न रहे, छल न करे, दुख न दे।

चूंकि पूरे भारत से रोज़ जिज्ञासु, प्रभु के खोजी, विद्वान और सिख संगत का आना रहता। अतः इन सभी स्थितियों को देखते हुए 'होला-मौहल्ला' मनाने का निर्णय गुरु साहिब ने लिया। यह सिख संगत, भारतीय समाज का विराट एकत्रीकरण था। समरसता वाली श्रृंगारवादी 'होली' समारोह का स्वरूप वीर रसमयी कर दिया गया। हर वर्ष 'होला-मौहल्ला' पर भारी भीड़ उमड़कर आती। भारी एकत्रित संगत में गुरुजी के वचन देश का मार्गदर्शन करते थे। गुरबाणी, कीर्तन कार्यक्रम होते थे। वीर योद्धा, निहंग अस्त्रों-शस्त्रों का प्रदर्शन करते। घोड़ों के करतब दिखाये जाते। चाँदमारी के कार्यक्रम होतें नगर कीर्तन में वीर सिंघों के सशस्त्र दर्शन होते। 'ढाडीयों' का पारम्परिक वीर रस में गायन संगत में जोशभर देता था। कवियों के कवि दरबार होते। विद्वानों में परिचर्चा होती। सामान्य जन के गिरते हुए मनोबल को 'चढ़दी कला' का आध्यात्मिक पाठ पढ़ाने का धरातल था-'होला-मौहल्ला' का समारोह और 'इकट्ठ'।

श्री आनन्दपुर साहिब में 'होला-मोहल्ले' पर आज भी सैंकड़ों नहीं, लाखों की संख्या में सिख संगत जुटती है। चारों गढ़-आनन्दगढ़, लौहगढ़, केसगढ़, फतेहगढ़ को सजाया जाता है। लोग दर्शन करते है। 'अमृत संचार' का काम भी होता है। निहंग गुलाल संग होला-मोहल्ला मनाते है। सभी वर्गों, सामाजिक समूहों के लोग इस त्यौहार में भाग लेते हैं।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा ''होला मोहल्ला'' श्री आनन्दपुर साहिब में मनाने की योजना, प्राचीन भारत के जनमानस में अंकित संस्कार, तीज त्यौहारों व कथाओं को नये वीर रस के साथ रखने की योजना की ही भाग था, जिसमें उन्होंने राम-कथा, कृष्ण कथा को नये संदर्भ में लिखा। महाभारत में 'खडग सिंह' नामक पात्र की रचना कर नया सदेंश दिया, वहीं 'रामावतार' में उन्होंने इस ग्रंथ का प्रयोजन स्वयं लिखा है-

''अवरि वासना नाहि मन, धरम युद्ध को चाघि''

इसी प्रकार होली जो भारतीय जन मानस में एक मौज मस्ती व श्रृंगार रस से जुड़ा उत्सव था, उसे पराक्रम दर्शन, धर्म व देश भक्ति व शक्ति प्रदर्शन व प्रेरणा का माध्यम बना दिया। जो निरन्तर जारी है-

''लोकां दियाँ होलियाँ ते खालसे दा होला है।''●

Hola Mohalla

- **Rajan Khanna**, Mumbai

Introduction -An enlightened person has no identification. Their values are universal and in tune with the timeless state of existence. This timeless state of existence can be given any name like Akal Purukh, God, Raam, Rahim, Hari, Parmaatma etc. But these names point to the same ultimate truth. It is useless to worship any name unless it becomes your own experience.

Hola Mahalla or simply Hola is a Sikh festival, which takes place on the first of the lunar month of Chet, which usually falls in March. This follows the Hindu festival of Holi; Hola is the masculine form of the feminine sounding Holi. Mahalia, derived from the Arabic root hal (alighting, descending), is a Punjabi word that implies an organized procession in the form of an army column accompanied by war drums and standard-bearers, and proceeding to a given location or moving in state from one Gurdwara to another.

This custom originated in the time of Guru Gobind Singh (1666-1708) who held the first march at Anandpur on Chet vadi 1, 1757 Bk (22nd February, 1701). Unlike Holi, when people playfully sprinkle color, dry or mixed in water, on each other the Guru made Hola Mahalla an occasion for the Sikhs to demonstrate their martial skills in simulated battles. This was probably done forestalling a grimmer struggle against the imperial power following the battle of Ninnohgarh in 1700. Holla Mahalla became an annual event held in an open ground near Holgarh Fort across the rivulet Charan Ganga, northwest to the town of Anandpur sahib.

Anandpur Sahib-Literally the City of Bliss, Anandpur is situated on one of the lower spurs of the Shiwalik Hills in Ropar District of Punjab and is well connected with the rest of the country both by road and rail. It lies 31 Kms north of Rupnagar (Ropar) and 29 Kms south of Nangal Township. Being one of the supremely important pilgrimage centers of the Sikhs it has been reverently called Anandpur Sahib. It will not be out of place here to mention that it was at Anandpur that on Baisakhi of 1699, Guru Gobind Singh carried out the supreme task of creating the Khalsa. It was here that the Guru announced the baptism of the Panj Piare and inaugurated the Khalsa, or the brotherhood of the holy soldiers who would henceforth be distinguished by five symbols all beginning with the letter "K" viz. kesh (uncut hair), kangha (comb), kachcha (pair of shorts), kara (steel bracelet) and kirpan (sword). Sikhs were further instructed to live to the highest ethical standards, and to be always ready to fight tyranny and injustice.

Having been the abode of the last two Sikh Gurus for two score years, the town was witness to many momentous events of Sikh history, including the Hola Mahalla festival, which is an annual feature. The festival has now lost much of its original military significance, but Sikhs in large numbers still assemble at Anandpur Sahib on this day and an impressive and colorful procession is taken out in which the Nihangs, in their traditional panoply, form the vanguard while parading their skill in the use of arms, horsemanship, tent-pegging, and other war-like sports.

Holla Mahalla festival -The festival has now lost much of its original military significance, but Sikhs in large numbers still assemble at Anandpur Sahib on this day and an impressive and colourful procession is taken out in which the Nihangs, in their traditional panoply form the vanguard while parading their skill in the use of arms, horsemanship, tent-pegging, and other war-like sports.

Warlike sports of the Nihangs - Originally known as Akalis, the Nihngas or Nihang Singhs are endearingly designated as

Guru's Knights or the Guru's beloved. They still carry the military ambience and heroic style that was cultivated during the lifetime of Guru Gobind Singh. Nihangs constitute a distinctive order among the Sikhs and are readily recognized by their dark blue loose apparel and their ample, peaked turbans festooned with quoits, insignia of the Khalsa and rosaries, all made of steel. They are always armed, and are usually seen mounted heavily laden with weapons such as swords, daggers, spears, rifles, shotguns, and pistols.

The word Nihang can be traced back to Persian nihang (alligator, sword) or to Sanskrit nishanka (fearless, carefree). In the former sense, it seems to refer to the reckless courage members of this order displayed in battle. In Guru Gobind Singh's writing, Var Sri Bhagauti Ji 47, it is used for swordsmen warriors of the vanguard. Whatever may be the origin the word Nihang, it signifies the characteristic qualities of the clan- their freedom from fear of danger or death, readiness for action and non-attachment to worldly possessions. During the eighteenth century, one of the confederate armies of the Dal Khalsa, constituted of the Nishanvalia misl chief, Naina Singh, whose style of tightly tied tall turban with a dumala gained currency and those who adopted were called Akali Nihangs.

The self-discipline and privilege they gained of convening at Akal Takht general assemblies of the Khalsa, brought the Nihangs into importance far out of proportion to their numbers or political authority. In the time of Maharaja Ranjit Singh (1780-1839), the Akali Nihangs maintained their independent existence. Their leader Phoola Singh Nihang, then custodian of the Akal Takht, was the voice of the religious and the moral conscience of the State, and at times he even censured and chastised the sovereign himself.

The Nihangs are today divided into several groups, each with its own Chaoni (cantonment), but they are loosely organized into two Dals (forces) - Buddha Dal and the Taruna Dal. These names were initially given to the two sections into which the Khalsa army was divided in 1733. Buddha Dal has its Chaoni at Talvandi Sabo in Bhatinda District, while the main Chaoni of the Taruna Dal Nihangs is at Baba Bakala. in Amritsar District.

Nihang Singhs in their traditional martial costumes, demonstrate their skills in fencing, horse riding and shooting.

The week long festival of Hola Mahalla concludes at Gurdwara Holgarh Sahib (which stands on the site of Holgarh Fort), one and half Km northwest of town across the Charan Ganga rivulet. It was here that Guru Gobind Singh introduced in the spring of 1701 the celebration of Holla on the day following the Hindu festival of Holi . Unlike the playful sprinkling of colors as is done during Holi, the Guru made Holla an occasion to demonstrate skills in simulated battle, which is presently carried out by the Nihangs.

The Nihangs assemble in thousands at Anandpur Sahib in March every year to celebrate Hola Mahalla. On this occasion they hold tournaments of military skills, including mock battles. The most spectacular event at the Hola Mahalla is the magnificent procession of Nihangs on horses and elephants and on foot carrying a variety of traditional and modern weapons and demonstrating their skill in using them. The Hola Mahalla festival is unique and distinguishable from other festivals in that the Nihang have tried to preserve the traditional form and content as established during its inception, and strictly observed by the Akalis for more than three centuries. ●

भाई नन्दलाल जी 'गोया'

- **स. गुरकीरत सिंह**, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पुणे

अकाल पुरख के सुत–साहिबगुरु गोबिन्द सिंह जी के अद्वितीय व्यक्तित्व का चित्रण; अपनी सीमित मानवीय ऊर्जाओं की स्थितियों में; समकालीन लेखकों, बाद में इतिहासकारों, शोधकर्ताओं, अन्यान्य मतावलम्बियों, कवियों और श्रद्धालुओं द्वारा करने का प्रयत्न होता ही रहा है। यदि एक ने उन्हें 'मरद अगमड़ा' और 'आपे गुर चेला' करके दरसाया है; तो दूसरे ने सरबंस दानी, अद्वितीय योद्धा, धर्म रक्षक कहा। यदि कुछ ने उन्हें पाखण्ड प्रहारक, संत सिपाही व पंथ के संरक्षक के रूप में पूजा; तो अन्यों ने महान कवि, खालसा सजनकर्ता, एक अकालपुरख के पुजारी कहकर नमन किया। परन्तु दशमेश गुरुगोबिन्द सिंह जी के संदर्भ में ये सभी चित्र अधूरे ही दिखाई देंगे, जब तक गुरु साहिब जी के हजूरी कवि, अनन्य सिख, आशिक–सादिक भाई नन्दलाल जी 'गोया' की बनी, काव्य रूप में तस्वीर शामिल न हो।

भाई नन्दलाल जी के पिता श्री छज्जूराम खत्री संस्कत व फारसी के प्रसिद्ध विद्वान थे। व्यवसायिक कारणों से, 1630 में, श्री छज्जूराम जी पंजाब छोड़कर गज़नी शहर में आकर बस गए थे। वे अपनी योग्यता के बल पर ही हाकिम, मीर मुंशी (दीवान) के पद पर जा पहुंचे। पचास वर्ष की आयु तक, आपके घर जो संतान पैदा होती, वह मर जाती। आखिर में 1933 में, उनके घर एक बालक ने जन्म लिया। जिसका नाम नन्दलाल रखा गया। जब बालक नन्दलाल जी 6 वर्ष के हो गए, तो इस्लामी प्रहारों के उस दौर में, पिता ने उनके लिए फारसी व अरबी भाषा शिक्षण की व्यवस्था की। बाल नन्दलाल जी तीक्ष्ण बुद्धि के छात्र साबित हुए। वे छात्रावस्था में विद्या अर्जित करते रहे, सफल छात्र बने। दीवान छज्जूराम जी सरल एवं साधु स्वभाव के विचारशील व्यक्ति थे। भाई नन्दलाल जी भी इसी प्रवत्ति के धारणी बने।

दीवान छज्जूराम जी रामानन्दी बैरागियों के सेवक थे। जब भाई नन्दलाल जी की आयु ग्यारह वर्ष की हुई, तब कुल रीति के अनुसार, उन्हें वैष्णव धर्म की दीक्षा देने का प्रबंध किया गया। भाई नन्दलाल जी ने विद्या प्राप्त करना जारी रखा। वे फारसी भाषा में उच्च कोटि की काव्य रचना का सजन करने लगे थे। जब वे 19 वर्ष के हुए, पहले माता और फिर पिता से सदैव के लिए बिछुड़ना पड़ा। माता पिता की सहसा मत्यु ने भाई नन्दलाल के कोमल मन को चिन्तन के लिए विवश किया। भाई साहिब जी ने, जग की रीत के अनुसार, गज़नी के हाकिम से पिता वाली पदवी पर नियुक्त कर देने की माँग की। परन्तु आयु छोटी होने के कारण, यह माँग नहीं मानी गई। जब अन्य छोटे मोटे पद को स्वीकारने के लिए कहा गया, तो भाई जी का चिन्तनशील मन उन्हें पिता के पुरखों की धरती पंजाब वापस ले आया। गज़नी शहर की सम्पत्ति बेचकर पंजाब के मुलतान में डेरा जमा लिया। 'दिल्ली दरवाजे' में घर बनाकर रहना आरम्भ कर दिया। स्थानीय लोग आदरभाव से 'आग़ा' कहकर बुलाते। फारसी भाषा में 'आग़ा' महोदय, श्रीमान्, माननीय इत्यादि सम्मानसूचक शब्दों की तरह प्रयोग में लाए जाने वाला शब्द है। धीरे धीरे, उस मौहल्ले का नाम ही 'आग़ापुर' पड़ गया।

आग़ापुर मौहल्ले के ही एक सहजधारी सिख खत्री परिवार की सुपुत्री सुभागी के साथ आपका विवाह हो गया। बीबी सुभागी गुरु–घर की श्रद्धालु होने के कारण अमतवेले (प्रभातकाल) में श्रीगुरुनानक देव की बाणी पढ़ती, जिसे श्रवण कर भाई नन्दलाल जी के मन में सिखी की प्रीत उपजी। दिन–प्रतिदिन, उनका गुरबाणी पर विश्वास बढ़ता गया। भाई नन्दलाल जी ने गुरमुखी लिपि का ज्ञान प्राप्त कर लिया। उन्होंने बहुत सी बाणी कंठस्थ भी कर ली। इसके बाद, भाई नन्दलाल जी गुरबाणी, गुरु इतिहास का गहन अध्ययन करने लगे।

विद्वानों का कहना है कि रत्न को छिपाया नहीं जा सकता। दैवी गुणों की सुगन्ध अवश्य फैलती है। भाई नन्दलाल जी की विद्वता, योग्यता और सत्यनिष्ठा की चर्चा मुलतान के हाकिम तक पहुंची। मुलतान के हाकिम ने भाई साहिब को बुलाकर मीर मुंशी की पदवी दे दी। इस पद पर भाई साहिब 6 वर्ष तक रहे।

आपके घर दो लड़के लखपतराय और लीलाराम पैदा हुए। जब दोनों ने बड़े होने पर सांसारिक कामकाज संभाल लिए, तो 1682 में आपके अन्तर्मन में गुरु के

प्रति वैराग्य पैदा हुआ। ...... और, आपने घर बाहर और धन–पदार्थ संतानों के हवाले कर श्री अमतसर साहिब की ओर चल पड़े। मानों श्री हरिमंदिर साहिब के दर्शनों से आत्मा तप्त हो गई। रास्ते में पड़ने वाले गुरुधामों के दर्शन करते, भाई नन्दलाल जी अपने गन्तव्य स्थान श्री आनन्दपुर साहिब पहुंचे। जहां उन्होंने दशम् पिता गुरु गोबिन्द सिंह जी के दर्शन किए। भाई साहिब जी ने गुरु के चरण स्पर्श किए। गुरु के चेहरे के अलौकिक प्रभा से प्रभावित हुए।

गुरु प्रीति की तरंगों में, भाई साहिब की सजनात्मक ऊर्जा ने पर्वत सी ऊंचाई को छुआ। जिसे एक मुरीद ने काव्य रूप में अपने मुरशद के समक्ष रखा। फारसी काव्य की इन महान रचनाओं ने गुरु दरबार में सिखों पर प्रभाव डाला। 'गोया' उपाख्य से ही पहचाने जाने लगे। अपने काव्य में आपने उपाख्य 'गोया' का ही वर्णन प्रयोग किया है। 'गोया' का शाब्दिक अर्थ है–कहने वाला। गुरु की स्तुति में ही कहने वाले भाई नन्दलाल जी 'गोया' ने गुरु दरबार में अपनी योग्यता का परिचय संगत को दिया। भाई साहिब का काव्य गुरबाणी, गुरमत, गुरु–व्यक्तित्व के रहस्य को सरलता से खोलने का वैसा ही माध्यम था, जैसा भाई गुरदास जी की वारां और कबित–सवैये। गुरमत के इन दोनों महान व्याख्याकारों की रचनाएं गुरुद्वारों में एक समान गायी जाती हैं, श्रवण की जाती हैं। यही नही, प्रमाण के रूप में भी इन रचनाओं का प्रयोग गुरुग्रंथ साहिब जी की हजूरी में होता है। अतः भाई नन्दलाल जी और भाई गुरदास जी की रचनाएं प्रमाणिक बाणी की श्रेणी में संगत द्वारा परवान है।

इसके बाद, भाई साहिब जी ने औरंगज़ेब के बड़े पुत्र मु–अज़म के मीर मुंशी नियुक्त हुए। यह गुरु गोबिन्द सिंह जी का कूटनीतिक फैसला था। यह कार्य सूचना प्राप्ति के लिए एवं खुफिया तंत्र को सुदढ़ करने के लिए किया गया। भाई नन्दलाल जी ने इस कार्य को पूरी योग्यता से निभाया। अंत में, फारसी लोकोक्ति 'रोशनी–ए–तबाह तो बर मन बला शुदी' ही सत्य सिद्ध हुई। एक दिन औरंगजेब के दरबार में कुरान की एक आयत पर परिचर्चा हुई। शाहज़ादा मु–अज़म भी उस समय उपस्थित था। उसने घर आकर, भाई नन्दलाल जी से उस आयत की व्याख्या करवाई। जिसे सुनकर मु–अज़म दंग रह गया। दूसरे दिन, शाहज़ादा मु–अज़म ने पिता औरंगज़ेब को कुरान की उस आयत की व्याख्या बताई। अगले दिन भाई नन्दलाल जी को पुरस्कृत करने के लिए दरबार से बुलावा आया। परन्तु यह जानकर की भाई नन्दलाल जी मुसलमान नहीं, मुतसब बादशाह औरंगज़ेब का अन्तर्मन घणा से भर गया। पुरस्कार के स्थान पर भाई नन्दलाल जी को प्रशंसा के दो शब्द कहकर ही वापस भेज दिया। औरंगज़ेब ने अपने पुत्र को समझाया कि ऐसा विद्वान तो केवल मुसलमान ही होना चाहिए। शाहज़ादा मु–अज़म ने घर आकर भाई नन्दलाल जी को सारी बाते कह सुनाई। भाई नन्दलाल जी को जीवन में पहली बार अपने हिन्दी होने के अस्तित्व का चिंतन करना पड़ा। उन्हें पहली बार गुरु गोबिन्द सिंह जी के राष्ट्रवादी संघर्ष के अर्थ समझ आने लगे। भाई नन्दलाल जी आने वाले खतरे के प्रति सचेत हो गए। वे जान गए थे कि अब यह मुहिम यहीं रोकनी होगी। दूसरे दिन ही, वे गुरु गोबिन्द सिंह जी के दरबार में हाजिर होने के लिए श्रीआनन्दपुर साहिब की ओर चल पड़े।

भाई नन्दलाल जी कुरान की व्याख्या करने वाले विद्वान थे। एकविचारी जेहाद वाली सोच पर उनके विचार गुरु–साध–संगत के लिए उपयोगी थे। परन्तु यदि वास्तविक व्याख्या मुगलों तक पहुंचती, तो घातक होता। अरबी, फारसी के जानकार होने के कारण, वे अधिकार के साथ कुरान व इस्लामी साहित्य पर अपना पक्ष रखने की स्थिति में थे।

भाई नन्दलाल जी श्री आनन्दपुर साहिब में ही रहे। आपने 'लंगर दी सेवा' को उत्तम माना। भाई नन्दलाल जी ने 'खण्डे की पाहुल' छककर तैयार–बर–तैयार हुए। अब वे भाई नन्दलाल सिंह जी हो गए। श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी की हजूरी में रहकर सिख पंथ और खालसे की 'रहत–मर्यादा' को जिस ऊंच स्तर पर भाई साहिब जी ने समझा और समझाया, वे अन्यों विद्वानों के भाग्य में नहीं था। इस बात का साक्ष्य भाई साहिब जी की रचनाओं में मिलता है। 1705 में, 82 वर्ष की आयु में भाई नन्दलाल सिंह जी 'गोया' का स्वर्गवास हो गया। जीवन के अन्तिम चौथाई हिस्से में रचित साहित्य के कारण,वे सदा सिख संगत के लिए एक आदर्श हो गए।●

भाई कन्हैया जी

-स. महिन्दर सिंह बाली, दिल्ली

भाई कन्हैया जी एक महान व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन सेवा कार्यों में लगाया। भाई कन्हैया जी नवम् गुरु तेगबहादुर जी के समय के सिख थे। वे सेवा पंथी या अदनशाही पंथी संस्थापक थे। उनका जन्म सोधारा गांव समीप वजीराबाद जिला सियालकोट में एक खत्री परिवार में हुआ था। उन्होंने जिला अटक पंजाब में एक विशाल धर्मशाला बनायी थी। उनके जीवन का लक्ष्य जाति, मजहब सम्प्रदाय से परे मानव मात्र की सेवा था।

1704 में, भाई कन्हैया जी श्री आनन्द साहिब की पावन धारती के दर्शन करने आए थे। उन दिनों मुगलों की शह पर पहाड़ी राजाओं ने श्री आनन्दपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया था। झड़पों के बीच भाई कन्हैया जी पानी की मसक उठाकर घायलों की प्यास बुझाने लगे थे। वे दोनों पक्षों के घायलों की सेवा भी करते। भाई कन्हैया जी की प्रेम और वात्सल्य से परिपूर्ण सेवा में इस बात का तनिक भी भेदभाव नहीं होता था कि यह गुरु के सिख है या दूसरा पक्ष। उनके इस व्यवहार की कई सिखों ने आलोचना भी की और गुरु गोबिन्द सिंह जी शिकायत की। गुरुजी ने भाई कन्हैया जी को बुलाया।

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा, ''ये वीर सिंह कह रहे हैं कि तुमने दुश्मनों को जल पिलाया और वे पुनः लड़ने की शक्ति प्राप्त कर पाए,..सत्य है?''

भाई कन्हैया जी ने कहा, ''जी हाँ, गुरुजी। वे जो कुछ कह रहे हैं, वह सत्य है। लेकिन सेवा करते समय मैंने सिखों और मुगल में कुछ नहीं देखा। मैंने केवल प्राणी मात्र ही देखा। गुरुजी, उनमें एक परमेश्वर का अंश-आत्मा विद्यमान है। गुरुजी, आपने ही तो 'एक पिता एकस के हम बारिक' का उपदेश दिया था।''

गुरु गोबिन्द सिंह जी उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुए, कि भाई कन्हैया ने गुरबाणी के मूल सार को ठीक प्रकार से समझ लिया है। गुरुजी ने कहा, 'भाई कन्हैया, तुम सही हो। आपने गुरबाणी के सच्चे संदेश को समझा है।''

गुरुजी ने भाई कन्हैया को एक मलहम देते हुए कहा, 'अब से तुम यह मलहम सभी घायलों के लिए प्रयोग करों, सभी की सेवा करो।''

सभी प्राणी मात्र का सम्मान करना, सिख जीवन दर्शन का आधार स्तम्भ है। भाई कन्हैया जी का सम्पूर्ण जीवन सेवा करने वाले सिख का जीवन है। उनके जीवन के बाद उनका स्मारक गुरुद्वारा अदुति सेवा साहिब है।

सेवा सम्बधी भाई कन्हैया जी के सिद्धांत-

1. निष्काम सेवा, 2. सभी के साथ समान व्यवहार 3. प्रेम व स्नेह से सेवा 4. पांच प्रकार के शस्त्र धारण करना, दूसरों में बांटना 6. सेवा कार्य।

भाई कन्हैया जी ने रेडक्रास के आने से लगभग ३०० वर्ष पहले सेवा का महान उदाहरण सारे विश्व के सामने प्रस्तुत किया।

Braham Gyani Baba Buddha Ji & Prampujya Mata Ganga Ji

One day Mata Ganga Ji did a request (benti) to her husband Shri Guru Arjan Dev Ji, that just as they bless the sangat with everything they wanted, could they not bless her with a child.

Although Shri Guru Arjan Dev Ji were the Guru themselves they replied to Mata Ganga Ji that if she wants anything she should do the seva of a great Gursikh.

Mata Ganga Ji thought the greatest Gursikh she knew was " Braham Gyani Baba Buddha Ji" he was very wise as he had been doing seva since the time of Sri Guru Nanak Dev Ji.

The next day Mata ji got her servants to prepare a great feast of several dishes, she got dressed in very expensive beautiful clothes, she got together a band of musicians, and they marched to where Baba Buddha Ji was, Mata Jee was riding on a horse, everyone else was walking.

However, when Baba Buddha Jee saw this royal pump, they turned their head away from Mata Ganga Ji.

When Mata Ji asked Guru Arjan Dev Ji, why this had happened, they explained to her that when you are blessed with any kind of seva, you must do it with humility. You must lose your ego and do it in a way which pleases God. Not in the way we might like to.

Mata ganga Ji was a very blessed person and she recognised what Guru Ji was trying to teach her. So the next day she woke up at Amrit Vela, had a bath and wore simple clothing with no jewellery or make up. She made a very simple langar of roti and saag for Baba Buddha Ji. From the moment she woke up she recited SATNAAM WAHEGURU and did not speak a word to anyone.

She then left carrying the langar by herself for the place where Baba Buddha Ji was.

Once Baba Buddha Jee saw Mata ganga Ji, bringing the Langar in this way, he ran towards her and said "Oh Mother, I am so happy you have brought food, I cannot wait to eat the langar cooked by your dear hands.

Mata Ji immediately started serving the Langar to Baba Buddha Ji. Whilst eating Baba Ji picked up a onion and smacked in on the ground and said "that just like I have smashed this onion, you will have a son that will smash the heads of tyrants"

On hearing this Mata ganga Ji was very happy.

The moral of the story (Sakhi) is that today if we were to do Guru Ji's or the sadhsangats seva in the same way Mata Ji did (without ego we too would be blessed by Waheguru)

-S. Kulwant Singh Sachdeva
Member State Minority Commission
Rank State Minister-M.P. Govt. &
M.P. State President-Rashrity Sikh Sangat

वे देह नहीं, राष्ट्रसेवा के अमरदीप है

श्रद्धांजलि

1971 अक्टूबर में शिमला जिला प्रचारक की जिम्मेदारी से मुक्त कर भारतीय जनसंघ हिमाचल प्रदेश के कार्यालय का प्रदेश प्रभारी तथा शिमला विभाग संगठनमंत्री की जिम्मेवारी निभाने का आदेश हो गया। राष्ट्रीय संगठन मंत्री माननीय नाना जी देशमुख से मिलने का अवसर प्राप्त होते ही मैंने साहस बटोर कर पूछ ही लिया कि मैं तो राजनीति का क ख भी नहीं जानता-मुझे यह जिम्मेवारी क्यों सौंपी है। चुनाव होने वाले हैं। परिणाम आपके प्रश्न का उत्तर होगा। सचमुच पूरे उत्तर क्षेत्र से पांच जनसंघ विधायक हिमाचल प्रदेश से ही चुने गए। मैं तो निमित्त था किन्तु श्रद्धेय नाना जी देशमुख का आकलन और परिस्थिति की जानकारी कितनी स्टीक थी, यह उनकी साधना का ही परिणाम था। उनकी साधना का एक कण पाने की लालसा में दिवंगत दिव्य आत्मा के चरणों में शत् शत प्रणाम।

-अविनाश जायसवाल
राष्ट्रीय महामंत्री संगठन, राष्ट्रीय सिख संगत

मृत्योंमामृतंगमय

- स्वामी चिन्मयानन्द
पूर्व केन्द्रीय गृहराज्य मंत्री, भारत सरकार

मृण्मय जगत की हर रचना का अन्त सुनिश्चित है, जातस्य हि मृत्यो ध्रुवं, जो जन्म लेता है, वह मरता भी है। जन्म मृत्य का यह सनातन चक्र ही जगत है। इसलिए प्राणिमात्र की इच्छा इस चक्र से निकलने की रहती है। जाने अनजाने हमारी हर कोशिश में कहीं न कहीं स्थिरता और अमरत्व की खोज बनी रहती है। परिवर्तनशील इस संसार की अपनी एक निरन्तरता के बावजूद हम मृत्यु के उस सत्य को कभी स्वीकार नहीं कर सके। यह एक यक्षप्रश्न अनादिकाल से इस जगत से जुड़ा हुआ है। उससे छूटने का उपाय हम निरन्तर खोज रहे हैं। धर्म, दर्शन, विज्ञान और साहित्य सब प्रकारान्तर से उसी एक सत्य की तलाश में है, जो अमर और स्थिर है। देवता हो अथवा दानव, नर हो या किन्नर अनन्त जिजीविषा सबकी जरूरत है। विश्व भर की सभ्यताओं ने समय समय पर अमरत्व को पाने की अलग अलग अपने ढंग से चेष्टाएं भी की हैं। पुराणों में वर्णित समुद्र मन्थन भी उसी खोज की दिशा में किया गया एक सामूहिक प्रयास था, जो आज भी जारी है। भव सागर का मंथन निरन्तर चल रहा है उससे जो कुछ निकलता है अच्छा अथवा बुरा, काल चक्र उसे समय को सौंपता चलता है। समाज उसे अपनी जरूरत के मुताबिक अपने में आत्मसात करता चलता है। देवताओं ने जिस अमृत को समुद्र के मंथन से प्राप्त किया था, उसे चार स्थानों पर हम आज भी खोजते हैं। हर बारहवें वर्ष हम, प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक के गंगा, क्षिप्रा और गोदावरी के तट पर आज भी जुटते हैं। मास पर्यन्त देवार्चन, ज्ञानार्जन, भक्ति साधना और तप-त्याग की कसौटी पर स्वयं को कसते हैं। संयम नियम पूर्वक दान, यज्ञ, जप और सत्संग के द्वारा हम उस अमृत तक पहुंचने का प्रयास करते हैं। ज्योतिर्विदों के अनुसार जब भी कुंभ राशि में गुरू का आगमन होता है, हमारा मन जीवन के उस दुर्लभ प्राप्य को पाने के लिए मचल पड़ता है। विश्व की समग्र सात्विक ऊर्जा उस समय पुन्जीभूत होकर गंगा तट पर हिमालय की उपत्यका हरिद्वार में सिमट आती है। अभाव और असुविधा में जीने वाला निरीह प्राणी भी उस अवसर पर वहां पहुंचकर उस सात्विक उष्मा को महसूस करता है और उस सनातन अमृत के अवगाहन में स्वयं को लीन कर देता है। उसकी स्वयं की निजता उस विराट जन संकुल की व्यापकता में खो जाती है, वह व्यक्ति से विराट हो जाता है। उसकी भौतिक अल्पता कहीं खो जाती है और वह भाव जगत की उस भव्यता में स्वयं को असीम भूमा से अभिन्न महसूस करने लगता है, उसका अपना भौतिक जगत कहीं लुप्त हो जाता है और वह आध्यात्मिकता के अनन्त साम्राज्य का अंश बनकर जरा, मृत्य, व्याधि से अलग अजर, अमर, अविनाशी आत्मा का स्वयं में साक्षात्कार करने लगता है। जीवन के इस विलक्षण उत्सव का अंग आप अवश्य बनना चाहेंगे। हम आपका स्वागत करते हैं आप अवश्य आयें और हरिद्वार की पवित्र धरती पर स्वर्ग के इस आलौकिक अनुष्ठान के यजमान बनकर मानव जीवन की सार्थकता का साक्षात्कार करें। हम इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी आपको दे रहे हैं।

श्री गुरु नानक देव जी महाराज-एक युग प्रवर्तक - प्रिंसीपल स. मलकीत सिंह पद्म,दिल्ली

गुरु नानक साहिब एक महान सन्त सुधारक थे जिन्हें सिख अपना गुरु और परमात्मा का अवतार मानते थे। आप सिख सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक तथा प्रथम गुरु थे। 'सिख' शब्द शिष्य का अपभ्रंश रूप है। गुरु नानक के शिष्य कालान्तर में 'सिख' नाम से प्रख्यात हुए और ये शब्द् धार्मिक विचारधारा का वाहक बन गया। आपका धर्म या पन्थ निरा सैद्धान्तिक या आदर्शवादी मत नहीं है। इसे शुद्ध व्यावहारिक मत कहना उपयुक्त होगा। अपने वर्ण-व्यवस्था की संकुचित परिधि से ऊपर उठकर मानव समाज को ''वसुधैव कुटुम्बकम'' का उपदेश दिया। आपके अनुसार आदर्श प्राणी है जिनमें ब्राह्मण की-सी साधना, सत्य प्रियता और चरित्र बल हो, क्षत्रिय जैसी आत्म रक्षा की भावना हो, वैश्य जैसी व्यावहारिक बुद्धि हो और शुद्र जैसी सेवा भावना हो। इस प्रकार अपने ईर्ष्या द्वेष में जलती हुई जनता को प्रेम संदेश दिया। आपका जन्म 15 अप्रैल, 1469 ई. (कार्तिक की पूर्णमासी) को तलवंडी नामक ग्राम (वर्तमान ननकाणा साहिब) में पिता महिता कालू और माता तृप्ता के यहां बेदी वंश में हुआ। पिता ने आपको धनोपार्जन के कुछ व्यवसायों में संलग्न करने के प्रयत्न किए, किन्तु उनका कोई प्रयत्न सफल नहीं हुआ। निराश होकर आपको सुलतानपुर लोधी भेजा गया जहां आप नवाब के मोदीखाने में लगभग 13 वर्ष कार्य करते रहे। 1499 ई. में जब एक दिन आप 'वेई' नदी में स्नान करने गए तब आपको भगवान के दर्शन हुए और भगवान ने आपको 'गुरुता' के प्रकाश का दान दिया। इस घटना के पश्चात् आप भगवान के निर्दिष्ट उद्देश्य 'नाम संदेश' को पूर्ण रूप तथा धर्म को प्रतिष्ठित करने के प्रयोजन से 22 वर्ष देश-देशान्तर में भ्रमण करते रहे। आपने पांच लम्बी यात्राएं की-भारत के तीर्थ स्थानों और मक्का मनदीना तक गए और सब जगहों पर 'नाम-सन्देश' द्वारा भटके हुए जन मानस को प्रभु-मार्ग दर्शाया। यात्राओं के पश्चात् आप 18 वर्ष करतारपुर में रहे और अपने जीवन को अपने धार्मिक उद्देश्यों के अनुसार सांचे में ढालकर लोगों को उस मार्ग का साक्षात्कार करवाया जिस मार्ग का अनुसरण करके कोई भी मनुष्य एक साथ राजा ओर योगी दोनों हो सकता है। करतारपुर में आप 70 वर्ष की आयु में 22 सितम्बर 1539 ई. में ज्योति जोत'समा गए। आपके दो पुत्र श्री चन्द और बाबा लक्ष्मी चन्द जी थे किन्तु आपने अपना उत्तराधिकारी अपने अनन्य सेवक 'भाई लहना जी' को घोषित किया और उसका नाम गुरु अंगददेव रखा।

कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ॥
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ॥१॥
साचा निरंकारु निज थाइ॥
सुणि सुणि आखण आखणा जे भावै करे तमाइ॥१॥रहाउ॥
कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ॥
अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ॥
भी तेरी कीमत ना पवै हउ केवडु आखा नाउ॥२॥
पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ॥
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ॥३॥
नानक कागद लख मणा पडि पड़ि कीचै भाउ॥
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ॥४॥

यदि मेरी आयु करोड़, करोड़ों वर्ष हो जाए और हवा मेरा खाना पीना बन जाय और यदि मैं ऐसी गुफा में जाकर बैठूँ जहां मुझे चन्द्रमा ओर सूर्य दोनों दिखाई न दें और जहां मुझे स्वप्न में भी कदाचित नींद न आए फिर भी तुम्हारा मूल्य मुझसे आंका नहीं जा सकता। तुम्हारा नाम कितना महान है यह मैं नहीं कह सकता। मैं तुम्हारे नाम की क्या महिमा गाऊ?॥1॥ सच्चा निरंकार निज स्थान पर है अर्थात् वह सत्य स्वरूप परमात्मा 'निज थाँउ' पर स्वयं ही स्थित है। लोग एक दूसरे से सुन-सुनकर वर्णन किए जाते हें परंतु यह कोई नहीं बता सकता कि 'वह' कितना महान है। हे प्रभु ! यदि तुम्हें भा जाए तो मेरे भीतर मिलने की लालसा उत्पन्न करो॥1॥रहाउ॥ यदि मैं बार बार कुहिआ और काटा जाऊ और चक्की में डालकर पीसा जाऊँ, यदि मैं अग्नि में जला दिया जाउँ और भस्म में मिला दिया जाऊँ, फिर भी तुम्हारी कीमत मुझसे आंकी नहीं जा सकती। तुम्हारा

नाम कितना महान है, यह मैं नहीं कह सकता। मैं तुम्हारे नाम की क्या महिमा गाऊँ।।2।। यदि मैं पक्षी होकर सैंकड़ों आसमानों में चक्कर लगाऊँ और किसी की दृष्टि में न आऊँ और न कुछ पिऊँ और न कुछ खाऊँ फिर भी तुम्हारा मूल्य मुझसे आंका नहीं जा सकता। तुम्हारा नाम कितना महान है, यह मैं नहीं कह सकता। मैं तुम्हारे नाम की क्या महिमा गाऊँ?।।2।। यदि मैं पक्षी होकर सैंकड़ो आसमानों में चक्कर लगाऊँ और किसी की दृष्टि में न आऊँ और न कुछ पिऊँ और न कुछ खाऊँ फिर भी तुम्हारा मूल्य मुझसे आंका नहीं जा सकता। तुम्हारा नाम कितना महान है यह मैं नहीं कह सकता। मैं तुम्हारे नाम की क्या महिमा गाऊँ?।।3।। हे नानक ! यदि मेरे पास लाखों मन कागज हों और पढ़-पढ़कर भावों को प्रकट करता रहूँ, यदि स्याही की कभी कमी न हो और मेरी कलम भी हवा की तरह निरन्तर चलती रहे, फिर भी तुम्हारी कीमत मुझसे आंकी नहीं जा सकती। तुम्हारा नाम कितना महान है, यह मैं नहीं कह सकता। मैं तुम्हारे नाम की क्या महिमा गाऊँ।।4।।

तू प्रभु दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ॥
मैं किआ मांगऊ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ॥१॥
घटि घटि रवि रहिआ बन वारी॥
जलि थलि महीअलि गुपता वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ॥रहाउ॥
मरत पइआल अकासु दिखाइओ गुरि सतिगुरि किरपा धारी जीउ॥
सो ब्रहमु अजोनी है भी होनी घट भीतरि देखु मुरारी जीउ॥
जनम मरन कउ इहु जगु बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ॥
सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईए साकत बाजी हारी जीउ॥३॥
सतिगुर बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ॥
नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ॥४॥

हे प्रभु ! तुम दान देने वाले दाता हो और बुद्धि में पूर्ण हो। हम तुम्हारे भिखारी हैं। हे महाराज ! मैं तुमसे क्या दान मांगू? इस जगत में कोई भी वस्तु स्थिर नहीं रहती है इसलिए मुझे नाम रूपी प्रिय वस्तु का ही दान दो।।1।। तुम घट-घट में रम रहे हो। जल, थल व पृथ्वी तथा आकाश में मध्य अन्तरिक्ष में भी तुम ही व्याप्त हो। गुरु के शब्द् को सुनने वाली बुद्धि तुम्हें देखती है।।रहाउ।। हे प्रभु! जब श्रेष्ठ सत्गुरु ने कृपा की तब मृत्युलोक पाताल और आकाश में मुझे तुम्हारा दर्शन करा दिया। हे मेरे प्रभु ! तुम योनियों से रहित हो, तुम वर्तमान में हो, भूतकाल में थे और भविष्य में रहोगे। हे मुरारी ! इस जीवन ने द्वैतभाव के कारण तुम्हारी भक्ति को भुला दिया है इसलिए यह बेचारा जन्म-मरण के चक्कर में ही पड़ता है। हे प्रभु ! यदि सत्गुरु मिले तो उससे शिक्षा मिलती है। मायाग्रस्त जीव यह मनुष्य जीवन रूपी बाजी हार गया है।।3।। हे प्रभु सत्गुरु ने जिसके बन्धन तोड़े है उसे इस संसार से निराला कर दिया है। वह फिर गर्भ में नहीं आता। मेरे गुरु गुरदेव बाबा नानक कहते हैं कि हे निरंकारी हरि ! जिनके मन में तुम नित्य बसते हो उनके हृदय में ज्ञान रूपी रत्न प्रकाशित होता है।।4।।

धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि॥
पबणि करे पत जिउ ढलि ढुलि जुंमणहार॥१॥
रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला॥
दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला॥१॥रहाउ॥
सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि॥
हंभी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि॥२॥
की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइ॥
लगी आवहि साहुरे नित न पेईआ होइ॥३॥
नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि॥
गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि॥४॥

हे मित्रवर ! धन, यौवन और फूल केवल चार दिन के मेहमान है। वे सब पद्मिनी के पत्ते के समान मुरझाकर सूखकर अनन्त: नष्ट हो जाते हैं।।1।। हे प्रिय ! जब तक नवीन यौवन का उल्लास है तब तक प्रभु प्रियतम के प्यार का आनन्द उठा ले अन्यथा दिन थोड़े हैं, थकान भी होगी और अन्नत: शरीर रूपी चोले ने बूढ़े भी हो जाना है।।1।। रहाउ।। मेरे प्रिय मित्र ! जो रंग रलियां करने वाले थे, वे अन्नत: कब्रिस्तान मे जाकर सो गए हैं। मैं दो मन चित्तवाली भी वहीं जा रही हूँ, किन्तु मेरी जीवात्मा अन्दर ही अन्दर धीमी आवाज में रो रही हैं।।2।। हे गोरी सुन्दरी कन्या ! तुम अपने कानों से यह बात क्यों नहीं सुनती कि जब तू पीहर-घर में आई थी तो तेरे मस्तक पर ससुराल घर लिखा हुआ था। जो कन्या के लिए तो पीहर-घर हमेशा नहीं होता।।3।। हे नानक ! जो कन्या मायके-घर में सोई रहती है समझ लो उसकी वृत्तियों पर दिन दिहाड़े सेंध लग रही है और अन्नत: वह गुणों की गठरी गंवा कर अवगुणों का गठ्ठर बांधकर आगे चलती है।।4।।●

साहिबजादा बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह

– **स. हरजीत सिंह मूंगा**, जगाधरी

दिसंबर 1704 को गुरु गोबिन्द सिंह जी ने सिखों और परिवार के साथ मुगल सेना के साथ संघर्ष करते हुए श्री आनन्दपुर साहिब जी को छोड़ा। फिर चमकौर साहिब की कच्ची गढ़ी में मुगल फौज से लड़ते हुए गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने दोनों बड़े सुपुत्रों बाबा अजीत सिंह जी और बाबा जुझार सिंह जी को रणभूमि में मातृभूमि के लिए बलिदान देते हुए देखा। गुरुजी को सिखों के साथ लड़ते हुए मुगलों की सेना चीरते हुए, चमकौर की गढ़ी से जाना पड़ा। सरसा नदी पार करते समय माता गुजरी जी अपने दो पोतों, साहिबजाद जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह जी के साथ थी। गुरु गोबिन्द सिंह जी उनसे बिछुड़ गए थे।

माता गुजरी जी और गुरुजी के दोनों सुपुत्रों को अपने यहां बीस वर्ष से रसोईयां का कार्य करने वाले ब्राह्मण हिन्दू गंगू के घर रहना पड़ा माता गुजरी जी के पास गहनें और सोने के सिक्के थे। गंगू का मन लालच से भर आया। उसने वह सब कुछ चुराने और पाने की सोची। फिर उसके मन में मुगलों द्वारा पकड़वाकर शाही ईनाम भी प्राप्त करना था। गंगू मोरिण्डा नगर गया और उसने शहर कोतवाल को सब कह सुनाया। सरहिन्द के नवाब वजीर खान ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

जेल में माता गुजरी जी ने अपने दोनों पोतों को ज्ञान की बातें बताई। आने वाली विपदा के सामने धर्म की लड़ाई कैसे लड़नी है, इसकी शिक्षा दी। सुबह नवाब दोनों साहिबजादों को पेश होने का आदेश दिया। काजी, मो-अल्लम की मौजूदगी थी। शरीया कानून का पालन होना था। उन्होंने अन्दर आने के लिए एक छोटा सा दरवाजा बनाया था, ताकि आने वाला झुककर अन्दर आए। परन्तु दोनों साहिबजादों ने पहले पांव दरवाजे से पार किए। फिर शीश उठाकर दरबार में प्रवेश करते हुए उद्घोष करने लगे-''वाहिगुरुजी का खालसा वाहिगुरुजी की फतेह।''

नवाब वजीर खान ने कहा, ''ओ, छोटे बच्चों ! तुम्हारे बड़े भाई पिता के साथ शहीद हो गए हैं। सौभाग्य से तुम मेरे दरबार में जिन्दा आ पाए हो। जल्दी करो और इस्लाम कबूल कर लो। मुस्लिम बच्चों के रूप में तुम्हारा जीवन राजकुमारों सा होगा।''

वीर गुरु पुत्रों ने स्पष्ट इन्कार ही नहीं किया, बल्कि नवाब की खिल्ली भी उड़ाई। उन्होंने कहा, ''सिखी हमें जान से भी प्यारी है। इस माया सी दुनिया हमें धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर नहीं कर सकती। हम गुरु गोबिन्द सिंह जैसे शेर के पुत्र है। जो तेरा भ्रम जल्दी ही दूर कर देंगे। हमारे दादा श्री गुरु तेगबहादुर जी ने अपने प्राण हिन्दु पीड़ितों की धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए बलिदान दिया था। तब तुम क्या धर्म परिवर्तन करवा पाए थे? जब गुरु अर्जुन देव जी ने मुगल जहांगीर के विरुद्ध संघर्ष में बलिदान दिया, तब वह क्या धर्म परिवर्तन करवा पाया था। हमने इस लासानी शहादत के इतिहास को जारी रखना है।'' 6 और 8 वर्ष के बालकों के ऐसे उत्तर सुनकर नवाब दंग रह गया।

नवाब वजीर खान का मंत्री सुच्चा नन्द, जोकि हिन्दु था, ने कहा, ''नवाब साहिब, ये सपोले हैं, ये सांप नहीं बनने चाहिए। सांप बन गए तो इस राज को डसेंगे। इनका जिन्दा रहना ठीक नहीं।'' तीन दिनों की जद्दोजहद के बाद काजी ने शरीया कानून की रोशनी में बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी को दीवार में चुनवा देने का हुक्म जारी किया। इस प्रकार गुरु गोबिन्द सिंह जी के दोनों छोटे पुत्र साहिबजादा जोरावर सिंह और फतेह सिंह सरहिन्द की दीवारों में चुनाव कर शहीद कर दिए गए। बाद में माता गुजरी जी ने भी अने प्राण त्याग दिए।

चारों पुत्र शहीद करवाने वाले श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का वंश खालसा रूप में चिरंजीवी है। एक अकाल पुरख की उपासना करने वाले गुरुजी का वंश भी अकाली है। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने औरंगजेब को सम्बोधित फारसी भाषा में रचित 'जफरनामा' में कहा है-

चे शुद के बचेगां कुश्ते चाहर।
बाकी बीमान्द अस्त पेचीदाहे मार॥

सरहिन्द के नवाब वजीर खान के दरबार में नवाब मलेरकोटला शेरखान ने छोटे निरीह बालकों को इस प्रकार की सजा देने का विरोध किया था। जिसे सिख संगत आज भी याद रखेंगी।●

प्रमुख स्नान पर्व

14-15 जनवरी	मकर संक्रांति
15 जनवरी	मौनी अमावस्या
20 जनवरी	बसंत पंचमी
30 जनवरी	माघ पूर्णिमा
12 फरवरी	श्रीमहाशिवरात्रि (शाही स्नान)
15 मार्च	सोमवती अमावस्या (शाही स्नान)
16 मार्च	नवसंवतारंभ स्नान
24 मार्च	श्री रामनवमी
30 मार्च	चैत्र पूर्णिमा पर्व
14 अप्रैल	मेष संक्रांति (शाही स्नान)
28 अप्रैल	वैशाख अधिमास पूर्णिमा

'संगत संसार' का महाकुम्भ विशेषांक

हरिद्वार में सम्पन्न होने वाले महाकुम्भ के उपलक्ष्य में महाकुम्भ विशेषांक निकालने का निर्णय लिया है। यह विशेषांक अप्रैल 2010 को प्रकाशित होगा। माननीय विद्वानों व लेखकों से निवेदन है कि वे अपने लेख भेजने की कृपा करें। विज्ञापनदाताओं से निवदेन है कि वे अपने संस्थानों का विज्ञापन देकर लाभ उठाएं। कृपया सामग्री भेजने के लिए कार्यालय का पता - पृष्ठ 3 पर देखें। **सं.**

बाबा बंदा सिंह बहादुर

-कर्नल कृष्ण सिंह जूनेजा, जम्मू

संक्षिप्त परिचय

जन्म	:16 अक्टूबर, 1670, राजौरी (जम्मू)
पिता का नाम	:श्री रामदेव भारद्वाज (राजपूत)
पहला नाम	:श्री लक्ष्मण दास
दूसरा नाम	:श्री माधोदास
तीसरा नाम	:स. बंदा सिंह बहादुर
गुरु	: पहले गुरु-जानकी प्रसाद, राजौरी जम्मू
दूसरे गुरु	:श्री साधुदास जिला लाहौर
तीसरे गुरु	:योगी ओघड़नाथ -नासिक (दक्षिण भारत)
चौथे गुरु	: गुरु गोबिन्द सिंह-नान्देड़ (दक्षिण भारत)
हमले किए	:समाणा नवम्बर 1709-सण्डोरा-1710, चापड़चिड़ी सरहिन्द के पास 12 मई, 1710, सरहिन्द मारी-14 मई, 1710 सहारनपुर, ननौता, जलालाबाद आदि जून-जुलाई 1710
लौहगढ़	:दिसम्बर 1710 से 1713 तक
गुरदास नांगल	:अप्रैल 1715-दिसम्बर 1715
विवाह	:1. राजा चम्बा की लड़की के साथ 2. वजीराबाद के खत्री लड़की के साथ
संतान	:1. अजय सिंह 2. अजीत सिंह
शहीदी	:9 जून, 1716

सिख गुरुओं के बाद सिख इतिहास में बंदा सिंह बहादुर उन महान व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने सिख राज्य की स्थापना का कार्य शुरु किया। बाबा जी सिख इतिहास में उस वक्त आए। जब उस समय की हुकूमत की सरगरम सिखों को खत्म करने का मनसूबा बना रही थी क्योंकि सिखों की बढ़ती शक्ति में उनको अपना काल दिखाई दे रहा था। दूसरा सिख धर्म अलग जीवन फिलोसफी पेश करता था। जोकि कट्टर मुसलमानों और कट्टर हिन्दुओं को सिख धर्म का बढ़ना फूले नहीं समा रहा था। तीसरा यह पहला समय था जब गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने अकाल गमन से पहले श्री गुरुग्रंथ साहिब जी को गुरु थाप दिया और देहधारी गुरुओं की प्रथा को यहीं समाप्त कर दिया। ऐसे हालातों में भी बंदा सिंह बहादुर ने अपना कर्तव्य बखूबी निभाया और कौम को चढ़ती कला में रखा और सफलता के हर कदम ने उनका सम्मान किया। उन्होंने मुसलमानों के जीत के अहंकार को तोड़ कर रख दिया।

पंजाब में वजीरखान, असलम खान और शमशद खान जैसे सुबेदारों को जूती की नौक से निवाया। मुगल हाकमों के जुल्मों का अन्त करके बंदा सिंह बहादुर ने सिख राज्य की झलक दिखाई। अपना राज्य स्थापित करके लौहगढ़ को अपनी राजधानी बनाया और खालसायी निशान फहराये, गुरु नानकदेव जी गुरु गोविंद सिंह जी का सिक्का चलाया और सिख संवत (सरहिन्द की जीत) से जारी किया।

राजपूत घराने में जन्म होने के कारण और उस समय के रिवाज के अनुसार आपका ध्यान पढाई में नहीं गया। घुड़सवारी करना, शिकार करना, कुश्ती लड़ना आपको शोंक था। खेती करने में भी आपका रुझान था।

एक बार हिरणी के शिकार करने की घटना ने उनके मन पर बहुत असर किया और वह अशांत रहने लगे और साधु संगत करने लगे, घर-बार त्याग दिया। राजौरी (जम्मू) साधु संगत में उनको एक वैरागी साधु जानकी प्रसाद मिला। इस साधु ने आपके पहले नाम लक्ष्मणदास को बदलकर माधोदास रख दिया और इसी साधु के साथ लाहौर आ गए। पर मन की भटकना खत्म नहीं हुई। 1686 में लाहौर की रियासत 'कसूर' के गांव रामथमण में बैसाखी के मेले में आपकी भेंट साधु रामदास से हुई और उनको आपने अपना गुरु बना लिया। पर उनके मन की भटकना खत्म नहीं हुई और वह साधु संगत करते करते भारत के दक्षिण में 'नासिक' पहुंच गए। यहां उनकी भेंट योगी अघोड़नाथ से हुई। यह योगी रिद्धि सिद्धि और तांत्रिक विद्या में बहुत प्रसिद्ध था। इस विद्या को सिखने के लिए मोधोदास ने योगी की बहुत सेवा की। उनकी सेवा से खुश होकर योगी ने योग के सारे गहरे राज भी माधोदास को बता दिए। योगी अघोड़नाथ की मृत्यु के बाद माधोदास ने गोदावरी के किनारे अपना डेरा बना लिया पर वह आम जनता का कुछ भला न कर सका। परन्तु जो उनके डेरे में आता तो माधोदास अपनी गुप्त शक्तियों को इस्तेमाल करता। इस तरह दूर-दूर तक उसकी चर्चा होने लगी।

जब औरंगजेब ने गुरु गोबिन्द सिंह जी से मिलने की इच्छा की तो गुरु गोविंद सिंह जी ने उसके उत्तर में अपना जवाब 'जफरनामा' लिखकर भाई दया सिंह के हाथों भेजा, परन्तु भाई दया सिंह ने वापिस आने में बहुत समय लगा दिया। तब गुरु गोविंद सिंह जी औरंगजेब से मिलने के लिए चल दिए। परन्तु अभी गुरु गोविंद सिंह जी 'बघेर' (राजस्थान) ही पहुंचे थे। कि औरंगजेब की मौत की खबर मिली। और गुरुजी वहीं से वापिस लौट पड़े। परन्तु औरंगजेब की मौत के बाद औरंगजेब के बड़े शहजादे मुअजम के छोटे भाई शहजादा मौहम्मद आजम ने धोखे से राजगद्दी पर कब्जा कर लिया। तो बड़े शहजादें ने गुरु गोविंद सिंह जी से सहायता मांगी। 18 जून, 1707 ई. को आगरा और धौलपुर के बीच 'जांजो' में दोनों भाईयों में लड़ाई हुई। गुरु जी ने 300 लड़ाके सिख बड़े शहजादें की मद्द के लिए भेजे और उसकी जीत हुई और शाहआलम बहादुर के नाम से हिन्दुस्तान का बादशाह बना। उसने गुरु गोविंद सिंह जी का बहुत सम्मान किया और वादा किया कि पंजाब में उन नवाबों और मुगल चौधरियों की, जो पंजाब में जुल्म कर रहे थे उनको उचित सजा देगा। इस वजह से सरहिन्द के वजीर खान असलमखान और जबर्दस्त खान के मनों में चिन्ता की लहर दौड़ गई। पर इन दिनों बहादुर शाह के भाई कामबक्श ने बगावत कर दी। बगावत को दबाने के लिए बहादुर शाह दक्षिण की ओर चल पड़ा। गुरुजी भी अपनी बात को मनवाने के लिए उसके साथ चल दिए। परन्तु गुरुजी को लगा कि बहादुर शाह मौलवियों और सलाहकारों के प्रभाव में आ गया हैं और नान्देड़ में बात टूट गई और गुरुजी ने दूसरा रास्ता अपना लिया। इस समय वो माधोदास को मिलने के लिए पहुंचे। माधोदास अपने डेरे पर नहीं था। गुरुजी उसके पलंग पर जाकर बैठ गए। तो माधोदास ने वहां आने पर अपनी गुप्त शक्तियों से गुरुजी पर प्रभाव डालने की कोशिश की। परन्तु उसकी एक न चली। तो माधोदास ने गुरुजी से पूछा कि आप कौन है तो गुरुजी ने उत्तर दिया। माधोदास तुम हमें जानते हों, इतना कहने पर माधोदास ने उन्हें पहचान लिया और बोला कि आप गुरु गोविंद सिंह है। तो गुरुजी ने कहा, कि हां तुमने ठीक पहचाना। मैं तुम्हें अपना सिख सजाऊं यह मेरा उद्देश्य है। तो माधोदास बोले, मैं हाजिर हूँ, 'मैं आपका बंदा'। गुरु गोविंद सिंह जी ने माधोदास को अमृतपान करवाया और बंदा सिंह बहादुर का नाम दिया। **क्रमश....**

पुण्यतिथि पर विशेष : 27 फरवरी, 1931

महान क्रांतिकारी-श्री चन्द्रशेखर आजाद

यह बात उस समय की है जब अपना देश गुलाम था। क्रांतिकारियों का प्रमुख नेता चन्द्रशेखर आजाद कांशी में छुपकर क्रांति कार्य का संचलन करता था।

सभी क्रान्तिकारियों की बैठक हो रही थी इस बैठक में बम की फैक्ट्री लगाने व कुछ शस्त्र खरीदने की बात हुई। धन की कमी होने के कारण विचार किया जा रहा था कि इसकी पूर्ति कैसे की जाए। काशी विश्वविद्यालय का एक नया विद्यार्थी आत्माराम उन्हीं दिनों में इस दल में शामिल हुआ था। यह बड़ा तेजस्वी व कर्मठ बुलन्दशहर निवासी था। इस बैठक में वह भी था। आजाद की तरफ देखकर बोला कि हमारे पड़ोस में एक सेठ रहता है जो ज्यादा धनी है और घर कई तिजौरियों भी रखता है। वहां एक डकैती में ही हमें 70-80 हजार रुपये मिल सकते है, जिससे हमारा सारा काम हो जाएगा।

आत्माराम की बात सुनकर आजाद कुछ गम्भीर होकर कुछ सोचने लगे और बोले-'हमने सुना है कि परिवार तो तुम्हारा भी धनी है फिर भी पड़ौस के घर में डाका डलवाने में तुम्हें क्यों खुशी है, तुम्हें अपने घर में ऐक्शन कराने की बात क्यों नहीं सूझी? तू कैसा क्रांतिकारी है? पहले अपने घर से ही शुरुआत करों। फिर किसी पड़ोस की सोचो। यह सब क्रांतिकारी अपना सुख चैन बेचकर, घर परिवार त्यागकर क्या डकैती डालने के लिए इकट्ठे हुए हैं। ध्यान देना! हम डाकू नहीं है ! क्रान्ति पथिक है।

आत्माराम का चेहरा बिल्कुल पीला सा पड़ गया। कुछ समय बाद बैठक समाप्त हुई। आत्मा राम किसी प्रकार की कोई बात किये, अपने घर चला गया। उसने अपनी पत्नी के सभी जेवर व घर पड़ी नगदी ले जाकर आजाद के चरणों में रख दी। आजाद ने प्रसन्नतापूर्वक उसे अपने गले से लगा लिया। बोला ! भाई तुम परीक्षा में सफल हुए हो। लेकिन यह गहने ले जाकर अपनी पत्नी को वापिस दे आओ और बहन को हमारा प्रणाम कहना। उसने जब अपना बहुमूल्य सुहाग मुझे देश के लिए सौंप दिया, यह क्या कम हैं। - **महेन्दर नागपाल**, फरीदाबाद

तैं की दर्द न आया

–**अश्विनी कुमार,** सम्पादक पंजाब केसरी

तालिबान द्वारा अफगानिस्तान से जुड़े अशांत कबायली क्षेत्र में अपहृत दो सिख व्यापारियों स. जसपाल सिंह और मोहन सिंह की गला काट कर नृशंस हत्या किए जाने और उनके कटे हुए सिर पेशावर स्थित भाई जोगा सिंह गुरुद्वारे भेजे जाने से पाषाण युग की याद ताजा हो गई। 6 और सिख अभी भी तालिबानियों के कब्जे में हैं।

अफगानिस्तान में सत्ता पर जब तालिबानियों का कब्जा था तो उन्होंने औरंगजेग और अन्य मुगल शासकों की तरह अल्पसंख्यक हिन्दुओं, सिखों पर जजिया (धार्मिक टैक्स) लगा दिया था। उनसे अपनी पहचान पुख्ता बनाने के लिए पीले रंग का कपड़े का अपने वस्त्रों पर लगाने का कहा गया था। तालिबान ने अपनी बर्बर व्यवस्था कायम कर रखी थी। महाराजा रणजीत सिंह का शासन कंधार तक था, अनेक सिख परिवारों का व्यवसाय फैला हुआ था। कई पीढ़ियों से सिख परिवार अफगानिस्तान में बसे हुए हैं लेकिन कट्टरपंथी तालिबान के चलते सिख परिवार अपने वजूद की लड़ाई लड़ रहे हैं। उनकी संख्या काफी घटी है, क्योंकि हजारों लोग इतने बरसों में दूसरे देशों में पलायन कर चुके हैं।

आज हालत यह है कि सिखों को अपनी जान-माल की हिफाजत के लिए तालिबानियों के विभिन्न गुटों को टैक्स देना पड़ता है। जो मुट्ठी भर सिख परिवार पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रान्त में रह रहे हैं, उन्हें भी तालिबान के दबाव में घुट-घुट कर जिन्दगी बसर करनी पड़ रही है। सिखों की नृशंस हत्या की घटना केवल सिख समुदाय के लिए आघात ही नहीं बल्कि भारत के लिए एक ललकार है। मुगल शासकों ने हमेशा ही भारतीयों पर जुल्म ढाए हैं। जब आतातायी बाबर ने हिन्दुस्तान में बहुत जुल्म ढाये, पूरे देश में जमकर लूटपाट की, बहु-बेटियों की इज्जत भी सुरक्षित नहीं थी तब श्री गुरु नानकदेव जी ने लिखा था :

''ऐती मार पई कुरलाणे तैं की दर्द न आया।''

अर्थात् बाबर ने इतने अत्याचार किए तो भी ईश्वर का दिल नहीं पसीजा। मोहम्मद गौरी के बाद कुतुबुद्दीन एबक, इल्तुतमिश, बलवन, अलाउद्दीन खिलजी, फिरोज तुगलक, सिकन्दर लोदी तथा बाबर से लेकर औरंगजेब, अहमदशाह अब्दाली आदि मुगल बादशाहों व आक्रांताओं ने हिन्दुओं का भयानक कत्लेआम किया।

औरंगजेब ने गोकुल जाट का सिर और धड़ के टुकड़े-टुकड़े कर चील, कौवों और कुत्तों के खाने के लिए आगरा की कोतवाली के चबूतेरे पर फैंकवा दिया था। गोकुल जाट के पूरे परिवार को तथा उसके साथ हजारों लोगों को जबरदस्ती मुसलमान बना लिया था। औरंगजेब ने शिवाजी के पुत्र शम्भा जी की आंखें निकलवा लीं और शोभा जी के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर जानवरों को खिला दिये थे। औरंगजेब ने हिन्दुओं को बड़ी भयानक क्रूरता से कुचला था तब हिन्दुओं की रक्षा के लिए श्री गुरु तेगबहादुर जी ने अपना बलिदान दे दिया था। भारत ने शाहदतें तो बहुत देखीं, सुनी और इतिहास का अध्ययन भी किया परन्तु 7 वर्ष और 9 वर्ष के बच्चों की शहादत और उन्हें जीवित ही दीवारों पर चिनवा दिया जाना बड़ा लोमहर्षक है।

गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने बेटों के हाथों में तलवार देकर उनकी पीठ थपथपाई थी। बड़े साहिबजादे अजीत सिंह और छोटे साहिबजादे जुझार सिंह युद्ध के लिए तैयार हुए थे। गुरुजी ने मुख चूमा। एक सिख ने अचानक कह दिया। सच्चे पातशाह ! आपने तो बच्चों की छाती पर जिराह बख्तर बांध दिये, परन्तु इनकी पीठ तो खाली है, आप शायद भूल गए है-गुरुजी ने एक नजर उस सिख पर डाली और बोले-

''ये गुरु गोविंद सिंह बेटे हैं, इन्हें कौन सी पीठ पर वार सहने हैं। जहां तलवार टकाराएंगी, वहां मैंने बख्चतर बांध दिया है। ये शहीद होने जा रहे हैं, इन्हें पीठ थोड़े ही दिखानी है। वास्तव में ऐसा ही हुआ, बच्चे शहीद हो गए लेकिन पीठ नही दिखाई। गुरु गोविंद सिंह ने धर्म रक्षा के लिए बलिदान दिया है। उनके शिष्य बंदा वैरागी को बादशाह ने गिरफ्तार करवाकर मुसलमान बनने को कहा तो उनका भी साथियों समेत कत्ल करवा दिया। भाई मतीदास को आरे से चिरवा दिया और सतीदास को रूई में लपेटकर जला दिया गया। आताताया मुगल शासकों की उस विरासत को आज तक ढो रहे हैं वह लोग जिन्हें हम लश्कर, जैश, हिज्ब, अलकायदा और तालिबान के रूप में जानते हैं।

जो लोग इस स्वर्ग जैसी धरती पर रोज एक सिर कटी लाश चौराहे पर टांगते रहे हैं, बच्चों को कोड़ों से पीठते हैं, निर्दोषों का सिर धड़ से अलग करते हैं, अगर यह जेदाह है तो धिक्कार है, ऐसी सोच रखने वालों को, ऐसे जेहाद को भी।

स्वास्थ्य दर्पण

-चंद्रकुमार टेकचंदानी, नागपुर

योग स्वास्थ्य की परम आवश्यकता

योगाभ्यास का प्रभाव केवल शरीर व शरीर के भीतर के अवयवों पर ही नहीं, मानव के मन पर भी पड़ता है। मन निर्विकार होने लगता है। मन के भ्रम व भय दूर होने से आनंद की स्थिति बनने लगती है। सुख की चरम सीमा अनुभव कराता है। पूर्ण व्यक्तित्व पर योगाभ्यास का प्रभाव पड़ता है। सारा व्यवहार सकारात्मक, रचनात्मक व सहयोगी बना देता है और मन यूं न केवल स्वयं के लिए, बल्कि सबके प्रति, समाज के प्रति सुखमय बन जाता है।

तकनीकी और विज्ञान से परिपूर्ण उन्नतिशील औद्योगिक महानगरों में यह एक आम समस्या हो गई है। मानव का स्वास्थ्य भारी जोखिम में पड़ गया है। प्रतिस्पर्धा से घिरे दौर में तथा कम समय में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति का तनाव मानसिक स्तर पर कई घातक परिणाम पहुंचाता है। लक्ष्यपूर्ति में असफलता से मानसिक अवसाद, निराशा तथा नकारात्मक सोच के कारण मानव अपना संतुलन खो देता है। इस तरह से महानगरों में मानव चारों ओर से प्रदुषित वातावरण में जी रहा हैं उसे सबकुछ प्रदूषित प्राप्त हो रहा है। इससे उसका शारीरिक स्वास्थ्य सुरक्षित रह ही नहीं सकता। शनैःशनैः उसकी रोग प्रतिकारक शक्ति क्षीण होने लगती है। उसके अन्दर के महत्वपूर्ण अवयव जैसे अग्न्याशय, यकृत, फुफ्फुस, आमाशय, पक्वाशय, मलाशय, आंतें, हृदय सबमें धीरे धीरे दोष उत्पन्न होने लगते हैं और रक्ताभिसरण ठीक से नहीं हो पाता। जिससे कई प्रकार की शिकायतें जन्म लेती है। अपचन से वायु-दोष तथा कोष्ठबद्धता लगातार रहने से अन्य कई गंभीर रोगों के होने की भी संभावना रहती है। महानगरों में यह समस्या हो गई है कि मानव मुश्किल से उम्र के 40 वसंत सुखपूर्वक स्वस्थ रह पाता है। उसके बाद शुरु होती है कष्टों की त्रासदी ! वजन बढ़ने के साथ उच्चरक्तचाप, मधुमेह, अस्थि संबंधित व्याधियां, सर्वाइकल या लम्बर स्पोंडीलोसिस, आर्थराइटिस, जोड़ों के दर्द की बीमारी, रक्तविकार से संबंधित अनेक प्रकार के चर्मरोग व सर्दी, खांसी, जुकाम से बढ़कर अस्थमा का होना सामान्य सी बाता हो गई है। दवाओ का सेवन धीरे-धीरे जरूरत बनता जा रहा है, जो बाद में आदत बन जाती है। कालांतर में बीमारियों की संख्या बढ़ती जाती है और हो जाती है दवाइयों की भरमार। तब स्वास्थ्य के प्रति हमारी आंख खुलने लगती है और सुबह जल्दी उठकर 'मॉर्निंग वॉक' शुरु किया जाता है। वजन कम करने की चिंता सताने लगती है। योग-प्राणायाम में रूचि पैदा होने लगती है। किंतु अव्यवस्थित दिनचर्या के कारण योगाभ्यास में भी निरंतरता नहीं रह पाती। कामकाज में समय बिताने के बाद, बाकी समय आमोदप्रमोद में या अन्य कार्यों में गुजर जाता है। आवश्यकता है दिनचर्या में परिवर्तन की, जिसमें स्वास्थ्य की देखभाल हेतु समय का नियोजन जरूरी है।

प्रदूषणयुक्त वातावरण में जीवन बिताने को मजबूर व्यक्ति, यदि 20 से 25 वर्ष की उम्र से ही प्रतिदिन प्रातःकाल में योगाभ्यास से जुड़ जाए, तो विशेष करामात हो सकती है। योगाभ्यास यदि स्थापित योगवर्ग में किया जाए, तो वह अनेक प्रकार के लाभदायी होता है। योगवर्ग में सामूहिक शक्ति कार्य करती है, जहां योगविद्या पर प्रकाश डालने से ज्ञान बढ़ता है। आहार-विहार पर चर्चा होती है। योग परिवार से संबंध बढ़ने लगता है। निरंतर योगाभ्यास से अपने स्वास्थ्य की सुरक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है, जिससे रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ी रहने से प्रदूषण से जूझने की शक्ति बनी रहती हैं अपने वजन के प्रति सजगता बढ़ने से तथा आहार में सावधानी हमारी शरीर के अनावश्यक मांस को कम करती है। नित्य प्रतिदिन योगाभ्यास पूरी लगन व तन्मयता से किया जाए तो व्यक्ति का स्वास्थ्य जगमगा उठता है। भीतर से सारे विकार एक एक करके दूर होने लगते हैं। संपूर्ण काया धीरे धीरे निरोगी होने लगती है। यह चामत्कारिक स्थिति उसी हालत में संभव है, जब योगाभ्यास में पूर्ण विश्वास व श्रद्धा हो। इस तरह से हम पाते हैं कि महानगरों में मानव को सुरक्षित स्वस्थ्य जीवन जीने के लिए योगाभ्यास को ढाल बनाकर

अपनाना श्रेयस्कर होगा, जो न सिर्फ स्वयं के लिए बल्कि उसके पूर्ण परिवार के भी हित में है। जीवन तभी तक सुखमय है जब तक हमारा स्वास्थ्य अच्छा है। अपना स्वास्थ्य स्वयं हमारे हाथ में है।

मानव के जीवन के लिए सात सुख गिनाए गए हें, जो निम्न रूप से हैं-

1. निरोगी काया 2. घर में हो माया 3. पुत्र आज्ञाकारी हो 4. पतिव्रता नारी 5. राज में पासा 6. सुस्थाना वासा 7. विद्याफल दाता।

इन सात सुखों में सर्वोपरि है-निरोगी काया। काया को निरोगी रखने का प्रयोजन आज के समय में राष्ट्र तक के लिए एक चुनौती बन गया है। राष्ट्र के कर्णधारों को भी इस समय को गंभीरता से लेना चाहिए। ज्ञात हो कि हमारा देश विश्व की 'मधुमेह-राजधानी' बन चुका है। स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। विशेषकर बड़े औद्योगिक नगरों में। सरकार की ओर से विशेष रूप से निवासी क्षेत्रों में सामाजिक सुविधा हेतु छोटे गए प्लाटों पर योगाभ्यास भवन बनाए जा सकते हैं। यह उपक्रम अस्पताल बनाने व उनके व्यवस्थापन व्यय से कई गुना सस्ता होगा।

समाज में स्वास्थ्य का प्रमाण बढ़ेगा और लोगों में आत्मविश्वास। योगाभ्यास का प्रभाव केवल शरीर व शरीर के भीतर के अवयवों पर ही नहीं, मानव के मन पर भी पड़ता है। मन निर्विकार होने लगता है। मन के भ्रम में भय दूर होने के आनंद की स्थिति बनने लगती है। सुख की चरम सीमा अनुभव कराता है। पूर्ण व्यक्तित्व पर योगाभ्यास का प्रभाव पड़ता है। सारा व्यवहार सकारात्मक, रचनात्मक व सहयोगी बना देता है और मनुष्य न केवल स्वयं के लिए बल्कि सबके प्रति, समाज के प्रति सुखमय बन जाता है। इसलिए योगाभ्यास के प्रचार व प्रसार में कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए। यही एकमात्र कल्याणकारी अस्त्र माव की स्वास्थ्य सुरक्षा का आधार है।●

जत्थेदार स. सुखदेव सिंह नामधारी बने उत्तराखण्ड सरकार में अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष बनें, दर्जा कैबिनेट मंत्री

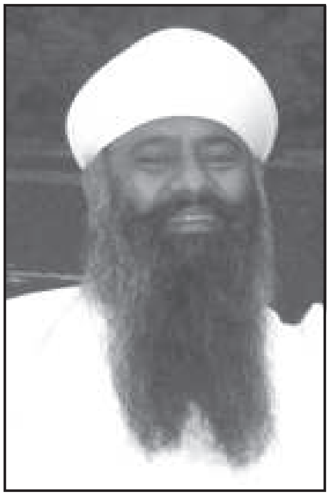

राष्ट्रीय सिख संगत के प्रदेश अध्यक्ष एवं सुप्रसिद्ध उद्योगपति, जागीरदार एवं समाजसेवक **स. सुखदेव सिंह नामधारी-बाजपुर** (जिला उधमसिंह नगर) को उत्तराखण्ड सरकार ने अल्पसंख्यक आयोग का अध्यक्ष मनोनित किया है। राष्ट्रीय सिख संगत ने विशेष तौर पर उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' तथा भाजपा शासित प्रदेश के मुख्यमंत्रियों का आभार जताया है। जिन्होंने बड़ी फराख दिली से सिखों का मान-सम्मान किया है। राष्ट्रीय सिख संगत ने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व एवं भाजपा शासित मुख्यमंत्रियों का आभार जताया है।

Remembering (In His Sweet Memory)

Hon'ble Late Giani Sant Singh Ji Maskeen

(1934-2005)

A famous Sikh theologian, was born in 1934 at Lak Marwat in District Bannu in present Pakistan. Giani ji was the only son of his parents and had lived at Alwar in Rajasthan for the last 57 years of his life. He was honoured by the Sikh community with the rare title of Panth Ratan for his services to mankind through the message of Gurbani. Giani Sant Singh Maskeen died on 18 February 2005 due to a massive heart attack while attending a marriage in Etawah in Uttar Pradesh, India.

Giani Sant Singh ji spread the message of the holy Guru Granth Sahib in different countries including USA, UK, Canada, Middle East, Thailand and Singapore. His followers include many persons who are not even from Sikh religion.

Giani ji was very fluent in Punjabi , Hindi , Urdu , Persian besides the basic knowledge of English. Maskeen ji was secular from heart and once agreed to perform katha in a Muslim mosque in Rajasthan but some of the organiser did not want a non Muslim to enter the mosque.

Giani Maskeen ji was a very well read person and frequently used to quote Ghalib, UStaad Zauk, Bulle Shah and other noted poets.

Giani ji once promised a Sikh high priest to come to Amritsar for doing katha every year during the month of Diwali and kept his words till the end of his life for almost over 25 years.

During the 300 yr celebration of the Khalsa Panth, Maskeen ji was invited by the then high priest of Akal Takht to perform katha, despite recovering from a heart problem in the USA and against the advise of the doctors, maskeen ji travelled to Amritsar for performing katha.

Giani Sant Singh Maskeen was infamous for exposing scams and other wrong doings in Sikh Temples, he was known to publish books detailing how many temple's would keep a majority of the donations for them selves. His works created shock waves through Sikhism since such scams were being exposed, for this he won the admiration of many and the hatred from some.

During the early part of his life and lack of resources at that time, Maskeen ji used to walk long distances to reach remote places for spreading the message of Sikhism. Maskeen ji always stayed away from politics and focused on spreading the message of Guru Nanak.

- Dr. Avtar Singh Shastry

[illegible]

ਸ਼ੋਕ ਸੰਦੇਸ਼

[illegible]

[illegible]

ॐ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

10196, केशव कुँज, देशबंधु गुप्ता रोड, झण्डेवाला, नई दिल्ली-110055

दूरभाष : +91(11) 23670365, 23679996 ईमेल : keshavkunj@sangh.org

सरकार्यवाह श्री सुरेश जोशी का वक्तव्य

हत्या के शिकार सिख युवक शहीद हैं

इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इनकार करने पर दो सिख युवकों की पाकिस्तानी तालिबानियों द्वार नृशंस हत्या के घृणित कार्य की देश के हर सभ्य नागरिक को घोर निंदा करनी चाहिये। आतंकवादियों द्वारा की गई हत्या इस भयानक सत्य को उजागर करती है कि अपने पड़ोस में इस्लाम आतंकवाद को खुली छूट मिली हुई है।

पाकिस्तानी जेहादियों द्वारा की गई इस नृशंसा हत्या की मैं घोर निंदा करता हूँ। सच्चाई यह है कि वहां पिछले कई वर्षों से हिन्दू और सिख जेहादियों के निशाने पर हैं। 'फाटा' (थ्रज।) क्षेत्र में रह रहे सिखों से जेहादियों द्वारा पिछले साल जबरन जजिया कर वसूल करना शुरु हुआ था और उनकी घर-सम्पत्ति पर जबरदस्ती कब्जा कर इस्लाम धर्म अपनाने के लिए भी ये जेहादी दबाव डाल रहे थे।

जैसे शहीद गुरु तेगबहादुर ने अपना शीश कटा दिया लेकिन इस्लाम धर्म को स्वीकार नहीं किया था वैसे ही अपनी प्राचीन परम्पराओं का सम्मान करते हुए इन सिख युवकों ने धर्म की खातिर जेहादियों के सामने सिर झुकाए नहीं सिर कटा दिये। अपने प्राणों का बलिदान देकर उन्होंने एक उज्जवल उदाहरण पेश किया।

मैं शहीद सिख युवकों के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति लाखों भारतवासियों के साथ मिलकर अपनी गहन संवेदनाएं व्यक्त करता हूँ। सिख पंथ एवं धर्म की रक्षा के लिए संघर्षरत सिख बहादुरों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सदा ही सक्रिय सहयोग दिया है।

पाकिस्तान के साथ वार्ता के लिए पहल दिखाने वाली केन्द्र सरकार से मैं आग्रह करता हूँ कि उस देश में रहने वाले हिन्दू और सिखों की रक्षा के विषय को महत्वपूर्ण प्राथमिकता दे और इस्लामी आतंकियों द्वारा अपहृत सिख युवकों की सुरक्षित रिहाई के लिए आवश्यक दबाव डाले।

राष्ट्रीय सिख संगत उत्तराखण्ड इकाई की एकदिवसीय बैठक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में सम्पन्न

राष्ट्रीय सिख संगत-उत्तराखण्ड की एक दिवसीय बैठक हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अतिथि ग्रह में सम्पन्न हुई। राष्ट्रीय सिख संगत की प्रदेश बैठक की अध्यक्षता करते हुए संत चिरंजीव सिंह ने कहा कि तख्त सचखण्ड श्री हजूर साहिब नान्देड़ में 300 साला गुरता गद्दी पर्व पर हमें जो सिख संगतों, सन्तों, विद्वानों, विचारकों तथा जनसमूह से जो आशीर्वाद प्राप्त हुआ है उसे आने वाले समय में 4 अप्रैल से 18 अप्रैल 2010 तक महाकुम्भ में लंगर, कथा कीर्तन तथा अन्य सेवा कार्य हम तन्मयता से निभाए।

राष्ट्रीय महामंत्री संगठन श्री अविनाश जायसवाल ने हरिद्वार में अगामी महाकुंभ के विषय में विचार प्रकट करते हुए कहा कि करोड़ों भारतीयों के लिए कुंभ स्नान बहुत ही आस्था और श्रद्धा का विषय है। देश-विदेश के कोने-कोने से आने वाले कोटि-कोटि श्रद्धालुओं की सेवा का संकल्प प्रभु सेवा ही है। हम अपने साथ समाज के धार्मिक सेवा भावी संगठनों के सहयोग से एक विशेष इतिहास रचने जा रहे हैं। यह हम सबके लिए विशेषकर उत्तराखण्ड प्रदेश के लिए गौरव का विषय है।

बैठक में उपस्थित स. सुखदेव सिंह नामधारी ने कहा कि हमारे जीवन का यह सबसे बड़ा सौभाग्य है कि महाकुंभ का पर्व हमारे जीवन में आ रहा है। हम सब उत्तराखण्ड वासी इस कुंभ महापर्व पर बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे तथा और संगत को भी प्रेरित करेंगे। बैठक में आगामी महाकुम्भ के लिए लंगर व्यवस्था, मैडीकल कैम्प, आवास, यातायात आदि की सेवा करने का हमारे को अवसर प्राप्त होगा। उत्तराखण्ड प्रदेश के राष्ट्रीय सिख संगत के सभी कार्यकर्ताओं ने प्रदेश अध्यक्ष स. सुखदेव सिंह नामधारी के नेतृत्व में सेवा करने का संकल्प किया। सभी कार्यकर्ताओं ने कहा जो संगठन हमें कहेंगा, हम दिन-रात कोटि-कोटि संगतों की सेवा का ह्रदय से निर्वहन करेंगे।

बैठक में उपस्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त कार्यवाह श्री शशिकान्त दीक्षित जी ने कहा, कि जो हम पुण्य का काम कर रहे हैं यह सब ईश्वर कार्य ही है। राष्ट्रीय सिख संगत के मीडिया एवं सम्पर्क प्रमुख डॉ. अवतार सिंह शास्त्री ने कहा, कि यह हमारा सौभाग्य है कि प्रभु ने हमारे को सेवा करने की सुम्मति प्रदान की है। यह हमारा कोई व्यक्तिगत कार्य नहीं है यह प्रभु का कार्य है। तभी हम सत्कर्म करते है। हम तो निमित्त मात्र है। इसीलिए ईश्वरीय कार्य से हमें पीछे नहीं भागना चाहिए। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहप्रान्त कार्यवाह श्री लक्ष्मीप्रसाद जायसवाल, बौद्धिक प्रमुख श्री सुशील कुमार, विभाग प्रचारक श्री युद्धवीर जी, उत्तराखण्ड सरकार गौसेवा आयोग के उपाध्यक्ष स्वामी जितेश्वरानन्द जी, प्रिंसीपल स. जागीर सिंह बाजवा, हरिद्वार जिलाध्यक्ष स. जसविन्दर सिंह लक्सर, काशीपुर जिलाध्यक्ष स. सुखविन्दर सिंह, स. रमनीक सिंह हरिद्वार, स. कुलवंत सिंह विरक, स. सुखचैन सिंह बड़ीवाला, स. भूपिन्दर सिंह, स. काबल सिंह-दिनेशपुर, स. अजीत पाल सिंह, स. साहब सिंह-छतरपुर, स. विरेन्दर सिंह, श्री प्रवीण यादव-हरिद्वार, स. रछपाल सिंह, स. मालक सिंह, स. प्रीतम सिंह-दिनारपुर, श्री मिलन प्रभात, श्री मनोज गहतोड़ी, स. अमर सिंह, स. गुरमुख सिंह, स. गजेन्दर सिंह, स. गुरसेवक सिंह, स. जसपाल सिंह चड्ढा, स. जसबीर सिंह-काशीपुर इत्यादि।

भूल सुधार

पिछले संगत संसार फरवरी-2010 अंक में पवित्र गुरबाणी एवं एक निबंध में प्रूफ रीडर की कमी के कारण भूल हुई है। एक हमारे सहयोगी जी के विज्ञापन में भी कुछ गलती हुई है। जिसके लिए हम गुरुपंथ से क्षमा प्रार्थी है और भविष्य में उस पर ओर अधिक ध्यान देंगे, ताकि इस तरह की भूल न हो। निवेदन है कि इस तरह की भूल जब भी आपके समक्ष आए तो हमें सूचना अवश्य दें। **-सम्पादक**

सिंहनाद

राष्ट्रीय सिख संगत दिल्ली प्रदेश की नई कार्यकारिणी की घोषणा

राष्ट्रीय सिख संगत के राष्ट्रीय अध्यक्ष स. गुरचरन सिंह गिल-जयपुर एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दिल्ली प्रान्त के संघचालक मा. श्री रमेश प्रकाश जी की उपस्थिति में झण्डेवाला-नई दिल्ली में स्थित दीनदयाल शोध संस्थान सभागार में नए पदाधिकारियों की घोषणा की गई। रि. चीफ इंजीनियर **स. देवेन्दर सिंह गुजराल**-दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष एवं **इन्दरजीत नाहल**-कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष मनोनित किए गए।

संरक्षक : 1 **स. भूपेन्दर सिंह**, पूर्व चेयरमैन, MMTC-STC
वर्तमान में डायरेक्टर- न्यूज चैनल, TFCI, BHEL, BSA, IFCI
2 सुप्रसिद्ध उद्योगपति **श्री सतनाम अरोड़ा**

उपाध्यक्ष : (1) रिटायर्ड विंग कमांडर स. जसवीर सिंह चड्ढा (2) स. हरदेव सिंह परदेशी
(3) सरदारनी हरजीत कौर जौली, (4) प्रिंसीपल-स. मलकीत सिंह पदम् (5) स. इन्दरजीत सिंह

महामंत्री (1) स. अवतार सिंह जुनेजा (2) स. किरणपाल सिंह त्यागी जी
(3) स. महिन्दर सिंह बाली (4) स. हरभजन सिंह दिओल (5) श्री पुनीत वोहरा

महामंत्री संगठन :- श्री पन्नालाल कोष प्रमुख : श्री राकेश सोफत

मंत्री (1) सरदारनी महिन्दर कौर नरूला-निगम पार्षद (2) स. अमरीक सिंह
(3) स. अजीत सिंह (4) श्री अनिल छाबड़ा

जारीकर्ता : **डॉ. अवतार सिंह शास्त्री**, राष्ट्रीय मीडिया एवं सम्पर्क प्रमुख

भारत सरकार पाकिस्तान से प्रेम-वार्त्ता का नाटक छोड़कर चल रहे आतंकी अड्डों को खत्म करने के लिए ठोस कारवाई करे-राष्ट्रीय सिख संगत

पाकिस्तान के शहर पेशावर में तीन गुरुसिखों का तालिबानी दरिंदों द्वारा वैहशियाना कत्ल तालिबानों द्वारा सिखों और मुसलमानों में विश्वभर में कई दशकों से बढ़ रहे सौहार्द की धज्जियां उड़ाकर दोनों समुदायों में पुरानी नफरत और जुलम की कहानी को ताजा करना और दोनों समुदायों में दुश्मनी निर्माण करने की योजना का षड्यंत्र मात्र है।

सिख भाईचारा दुनिया भर में 'मानस की जात सभै एको पहिचानबो' में श्रद्धा और विश्वास रखता है। यह कुकृत्य उनकी बेबसी और उसकी प्रभु सत्ता को चुनौती है। यह भारत सरकार की विश्व भर में अपनी असमर्थता का भी परिचायक है। आज भारत की एकता, अखण्डता और समप्रभुता को चुनौती देने के लिए पाकिस्तान अपनी धरती पर गुप्त समर्थन देकर तालिबानों और अलकायदा के हौसले बुलंद कर रहा है। इन अड्डों में प्रशिक्षण देकर तालिबानी न सिर्फ कश्मीर में अमन को तबाह करने पर तुले हैं बल्कि वह पाकिस्तान के अस्तित्व को भी खतरे में डाल रहे हैं। बेहतर है पाकिस्तान खुद ही भारत के खिलाफ चलाए जा रहे आतंकी ठिकानों को नष्ट कर देवे। नहीं तो आने वाले समय में भारत की किसी स्वाभिमानी सरकार को यह काम करना पड़ेगा।

आज पाकिस्तान और अफगानिस्तान में हिन्दु सिखों के अन्तिम संस्कार के लिए दोनों समुदायों को तालिबानी जालिम नेता मरने के बाद अपनी जमीन पर दाह संस्कार तक नहीं करने देते। हिन्दु सिख भाई मजबूरी में गुरुद्वारों की

अतिरिक्त धरती पर ही संस्कार करते है। यह हिन्दु सिख सहभाव तालिबानों को मंजूर नहीं। **राष्ट्रीय सिख संगत** भारत सरकार से मांग करती है कि पाकिस्तान से प्रेम वार्ता का नाटक बंद करके और आतंकी अड्डों को स्वयं खत्म करने के लिए ठोस कार्रवाई करे और कारगर कदम उठाए। इस अवसर पर पाकिस्तान में कत्ल किए गए सिखों के लिए विरोध प्रदर्शन किया और अपना मैमोरेण्डम दिया। राष्ट्रीय सिख संगत के स. उजागर सिंह, स. हरदेव सिंह प्रदेशी, स. देवेन्दर सिंह गुजराल, स. मलकीत सिंह, श्री अनिल छाबड़ा एवं भाजपा सिख प्राकेष्ठ के स. आर.पी. सिंह, स. जसपाल सिंह मनचंदा तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने प्रदर्शन में भाग लिया।

'सांझीवालता' श्री गुरुग्रंथ साहिब का उपदेश और उसकी एक झलक-स. हरभजन सिंह दिओल

कोई बोलै राम-राम, कोई खुदाए,
कोई सेवै गुसईंयां, कोई अलाहि।
कारण करण करीम, किरपा धार रहीम। रहाउ॥
कोई नावै तीरथि कोई हज जायि।
कोई करै पूजा कोई सिरु निवायि॥

(रामकली महला 5वां अंग 885)

श्री गुरु नानकदेव जी महाराज ने साधुओं को भोजन करवाकर सच्चा 'सौदा' किया। गुरु अंगददेव ने उसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए माता खिवी जी को लंगर प्रथा का प्रभारी बनाया। ताकि जाति प्रथा को भूलकर सब एक साथ बैठकर भोजन करें यानि लंगर छके। **'मानस की जात सभै एकै पहिचानबो'** गुरु अमरदास जी ने इसी प्रथा को और बढ़ावा दिया और लंगर की महत्ता और भी बढ़ा दी और पहले पंगत फिर संगत का पैगाम दिया। फिर गुरु अर्जुनदेव जी ने लंगर को सेवा का रूप दिया और माता गंगाजी को सेवा भावना से लंगर बनाकर बाबा बुड्ढा जी को छकाने के लिए कहा। उस सेवा भावना से छकाए गए लंगर से माता गंगा जी को पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद मिला।

गुरु नानकदेव जी के चलाए गए इस सच्चे सौदे को पूरे संसार में पैगाम देने के लिए हरिद्वार पर हो रहे कुम्भ स्नान पर करोड़ों की संख्या में आ रहे भक्त जनों को इस प्रथा के महत्व की जानकारी करवाना यानि सांझीवालता का एक संदेश घर-घर पहुंचाना है। राष्ट्रीय सिख संगत गुरमत के अनुसार गंगा के पवित्र घाट पर लंगर माता गंगा जी का आयोजन कर रही हैं और साथ में कई और सेवा कार्य यानि भाई कन्हैया जी मेडीकल कैम्प तथा 9 अन्य कार्यक्रम गुरमत प्रथा के अनुसार राष्ट्रीय सिख संगत द्वारा किए जा रहे हैं।

सांझीवालता के उद्देश्य सिख संगत की दिल्ली प्रदेश इकाई ने 31 जनवरी, 2010 को विश्व गौ ग्राम यात्रा-दिल्ली के रामलीला ग्राउंड में हुए भव्य कार्यक्रम में यातायात को संभालने की जिम्मेदारी ली और प्रदेश की सभी इकाईयों ने मिलकर इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया। इस कार्यक्रम में सबसे ज्यादा यातायात यानि 300 बसों को कंट्रोल करने का काम पश्चिम विभाग को दिया गया। उसका नेतृत्व पश्चिम विभाग के अध्यक्ष श्री एस. एस.नन्दा ने खुद संभाला। संगठन महामंत्री राकेश सोफत, विभाग महामंत्री जसविन्दर सिंह बंटी और उनकी पूरी टीम ने इस कार्य को बहुत उत्तम तरीके से पूरा किया। दक्षिण विभाग के महामंत्री स. तजिन्दर सिंह, संगठन प्रदेश महामंत्री पन्नालाल ने पार्किंग के बैनर और सिख संगत के बैनर का कार्य बहुत ही खुबसूरती से किया। पूर्वी विभाग के महामंत्री स. किरणपाल सिंह त्यागी, संगठनमंत्री जगदीश सिंह एवं सहयोगी टीम ने वी.आई.पी. पार्किंग का कार्य बहुत अच्छे तरीके से किया। मध्य दिल्ली , उत्तरी दिल्ली और दक्षिणी दिल्ली विभाग ने स्कूटर पार्किंग और पार्किंग में लगे सभी वाहनों की सूचना प्रसारित करने का कार्य संभाला।

Withdraw Secretary Level Talks with Pakistan Unless Security of Sikhs and Hindus is Guaranteed by Pakistan's Government

-Bakshi Pramjeet Singh

Baskshi Paramjit Singh, President-Sikh Brotherhood International and Senior leader of Shiromani Akali Dal (Badal) has expressed anguish and outrage over the beheading of three innocent Sikhs (Shahid Jaspal Singh and His two nephews) by Taliban in Pakistan for not converting to Islam. Terming them as the GREAT MARTYRS, Bakshi Paramjit Singh said that by sacrificing their lives for their faith they have followed the high standards set by Sikh Gurus-Guru Tegh Bahadur and Guru Gobind Singh.

Addressing a press conference in Delhi on this subject, Bakshi Pramjit Singh said that as per his knowledge 25 Sikhs are still being held hostage by Taliban. He demanded that Government of India must ensure safe and secure return of all the Sikh Hostages at the earliest. he said that in view of sensitivity of this issue Government of India must inform its citizens what steps they have taken in this regard and what their counterparts in Pakistan are doing.

Expressing anguish over callous attitude of Government of India over security concerns of Sikhs and Hindus in Pakistan, Bakshi Paramjit Singh demanded that Government of India should shelve Secretary level talks with Pakistan till all the Sikh hostage are released and safety and security of Sikh and Hindus is guaranteed by Pakistani Government in their country. He said that if the Pakistani Government fails to get Sikh hostages released, India should ban the entry of Pakistani Hockey team also in the coming Hockey world Cup being hosted by us.

He said that not only Sikhs and Hindus but entire country is outraged by this incident and they are anxiously awaiting the response of Government of India headed by a devout Sikh Prime Minister Manmohan Singh. He said that this is the time when Prime Minister Manmohan Singh should get-up and prove that he is not a dummy and can protect the interests of his community not only in India but in Pakistan as well.

Expressing solidarity with Sikh and Hindu community in Pakistan, Bakshi Paramjit Singh assured that they will leave not stone unturned to raise this issue at National and International level. Deploring poor track record of Human Rights in Pakistan, he asked Government of India to raise this issue with United Nations also to highlight the plight of Sikhs and Hindu minorities in Pakistan at international level. He said that this is the third such incident in last five months and if India and international community does not wake up now, Taliban will annihilate all the minorities in their area of dominance.

'हरिद्वार महाकुम्भ विशेषांक'

लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली।
गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली।।

महाकुम्भ अंक के विशेष आकर्षण-

जब देवता और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था तब से भारतवर्ष में कुम्भ महापर्वों की परम्परा का शुभारम्भ हुआ। हरिद्वार नगरी आदिकाल से तपस्वियों, ऋषियों, गुरुओं, सन्तों और वीर पराक्रमी महापुरुषों की तपस्या स्थली एवं कर्मस्थली रही है। उनसे न केवल उत्तराखण्ड प्रदेश को बल्कि देश विदेश में रह रहे करोड़ों भारतवासियों को परिचित कराने का गौरवपूर्ण अवसर परमपिता परमात्मा ने आपको सौभाग्य से प्रदान किया है।

महाकुम्भ विशेषांक लयी अपणे इदारे, व्यापारक फर्म या कम्पनियां दे विज्ञापन देण दी कृपालता करो जी ।

विज्ञापन मूल्य एवं छपाई स्थान

1.	पिछला बहुरंगीय अन्तिम पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (19.5 X 26.5)	रु. 50,000
2.	कवर पृष्ठ क्रमांक 2 और 3	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (19.5 X 26.5)	रु. 40,000
3.	अन्दर बहुरंगीय पूर्ण पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (19.5 X 26.5)	रु. 35,000
4.	श्याम श्वेत पूर्ण पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (19.5 X 26.5)	रु. 20,000
5.	श्याम श्वेत आधा पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (10 X 13.3)	रु. 10,000
6.	श्याम श्वेत चौथाई पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (5 X 6.5)	रु. 5,000

सूचना

- चैक/ड्राफ्ट 'संगत संसार'-नई दिल्ली के नाम बनाकर 'संगत भवन' 4/28, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, सरस्वती मार्ग, कृष्णा मार्किट, नई दिल्ली-110 005 (दूर. 25728030, 24505289) पर भिजवाने की कृपा करें।
- विज्ञापन सामग्री कम्प्यूटर से निकली हुई अथवा बहुरंगीय छपी हुई हो तो छपाई में सुविधा रहेगी। छपने वाले चित्र भी छपाई की दृष्टि से बहुत ही अच्छे होने चाहिए। विज्ञापन छपवाने से पूर्व संस्था द्वारा लिखित वर्क आर्डर प्रेषित करना आवश्यक है।
- आदेश एवं सामग्री प्राप्त करने की अन्तिम तिथि 20 मार्च, 2010 रहेगी। अत: कोरियर/रजि. डाक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए 7 दिन पूर्व प्राप्त करवाने की व्यवस्था करवाएं, ताकि सामग्री और विज्ञापन को उचित स्थान दिया जा सके।

भवदीय

स. चिरंजीव सिंह
राष्ट्रीय मार्गदर्शक

स. गुरचरन सिंह गिल
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अविनाश जायसवाल
राष्ट्रीय महामंत्री संगठन

बिहारी लाल
राष्ट्रीय महामंत्री

डॉ. अवतार शास्त्री
राष्ट्रीय मीडिया एवं सम्पर्क प्रमुख

स. सुखदेव सिंह नामधारी
प्रदेश अध्यक्ष-उत्तराखण्ड